भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग • INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

वन्दे मातरम्

बाईसवाँ अंक 2020 - 2021

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेज़री बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

हिन्दी पत्रिका “वंदे मातरम्” के 21वें अंक का विमोचन समारोह।

सत्यमेव जयते

हिन्दी पत्रिका

वन्दे मातरम्

अर्धवार्षिक पत्रिका

बाईसवाँ अंक

2020-21

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्रीमती मधुमिता बसु प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
परामर्शदातृ समिति	:	श्री राहुल कुमार, उपमहालेखाकार (प्रशासन) श्री शीश राम, उपमहालेखाकार (पेंशन)
प्रधान संपादक	:	श्री रेबती रंजन पोद्दार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	:	श्री चन्दन कुमार बढ़ई, हिन्दी अधिकारी
उपसंपादक	:	श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
सहायक	:	श्री जितेंद्र शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) सुश्री स्मृति, वरिष्ठ अनुवादक श्री कुन्दन कुमार रविदास, कनिष्ठ अनुवादक श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह, कनिष्ठ अनुवादक श्रीमती आस्था गुप्ता, लेखाकार
टंकण कार्य	:	श्री अतुल कुमार, लेखाकार

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते हैं।

मधुमिता बसु
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" का बाइसवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में लिया गया एक विनम्र प्रयास है। हिन्दी अत्यंत समृद्ध भाषा कहलाती है क्योंकि इसने अन्य भाषाओं के कई शब्द अपने में समाहित कर लिए हैं। मुझे सम्पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनेगी।

मैं इस अंक के प्रकाशन एवं श्रेष्ठ सम्पादन हेतु पत्रिका के संपादक मण्डल और सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

म बसु,

मधुमिता बसु

राहुल कुमार

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

हमारी कार्यालयी हिन्दी पत्रिका ‘वन्दे मातरम्’ का बाईसवाँ अंक आप सभी को सहर्ष समर्पित है।

यह अंक सम-सामयिक विषय-वस्तु, रचनात्मक ऊर्जा और आधुनिक कलेवर से युक्त है। मुझे विश्वास है कि सदा की भांति यह अंक भी पाठकों के लिए स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

राहुल कुमार

शीश राम

उपमहालेखाकार (पेंशन)

संदेश

हमारा कार्यालय भाषाई दृष्टि से 'ग' क्षेत्र में अवस्थित है। मुझे प्रसन्नता होती है कि इस कार्यालय के अधिकारी/ कर्मचारीगण हिन्दी की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनकी रचनात्मक गतिविधियों से कार्यालयी गृह पत्रिका 'वंदे मातरम्' का उत्तरोत्तर संवर्धन हो रहा है। इस पत्रिका का ई-संस्करण प्रकाशित होने के कारण यह सुलभ, सहज, संप्रेषणीय होने के साथ-साथ कागज की बचत कर पर्यावरण रक्षा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करता है।

इस पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु पूरी संपादकीय टीम को बधाई।

शीश राम

संपादकीय

हिन्दी भाषा भारत की राष्ट्रीयता एवं सामासिक एकता की प्रतिध्वनि है। पुरुषोतम दास टंडन का कथन है कि 'हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।' भारत की विविधता तथा बहुरंगी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखते हुए राजभाषा हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में विस्तार पा रही है। हिन्दी भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है तथा पूरे देश में समझी जाने वाली भाषा है। बाजारवाद, मुक्त अर्थव्यवस्था तथा उदारीकरण ने भाषाई परिदृश्य को प्रभावित किया है। हिन्दी भाषा भी अपनी सरल एवं सहज प्रकृति के कारण नवीन परिस्थितियों के साथ नए शब्द, नए पदबंधों को अपनी शब्दावली में सम्मिलित कर सरल अभिव्यक्ति का माध्यम बन रही है। साथ ही राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा विकसित तकनीकी टूल जैसे स्मृति आधारित अनुवाद टूल (कंठस्थ) तथा लीला आदि हिन्दी में विभागीय कार्य सम्पन्न करने में बेहद मददगार सिद्ध हो रहे हैं।

वंदे मातरम् के बाईसवें अंक को यथा संभव उपयोगी, सार्थक एवं रुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है। यह अंक आप सुधी पाठकों को कैसा लगा, कृपया अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएँ।

चन्दन कुमार बढ़ई

(संपादक)

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक:हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2018-2019/134

दिनांक: 20 .01.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(प्रशासन हिन्दी सेल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता - 700 001

विषय: अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के इक्कीसवें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के इक्कीसवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का अंक भी पूर्व के अंको की भांति बेहद ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अति मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सारगर्भित, उच्च स्तरीय एवं बेमिसाल हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं, वो हैं - "जीवन रुकता नहीं (कविता)", "पिता (कविता), "कामकाजी माँ (लेख)", "कोशिश (कविता)" एवं "सोशल मीडिया (लेख)" आदि।

आपकी यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है, जिसकी निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

भवदीय

20/01/2021

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग
महा निदेशक, लेखा-परीक्षा का कार्यालय,
केन्द्रीय, कोलकाता

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT,
CENTRAL, KOLKATA.

Adm. Hindi Cell.

पत्र सं.-राजभाषा/सी/32/खण्ड-III/84
दिनांक: 28-01-2021

सेवा में,

हिंदी अधिकारी (प्रशासन हिंदी सेल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक),
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंगस,
कोलकाता-700 001

28 JAN 2021
RECORD-II

विषय: अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के 21वें अंक की प्राप्ति ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" का 21वाँ अंक प्राप्त हुआ ।

पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएँ अत्यंत सुपाठ्य, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं । ये सभी रचनाएँ अत्यंत रूचिकर तथा प्रासंगिक भी हैं ।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं ।

भवदीय,

रमेश झा

हिंदी अधिकारी (राजभाषा)

आपके पत्र

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर

ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) - II, MAHARASHTRA, NAGPUR

सत्यमेव जयते

संख्या.राजभाषा 8(II)/2020-21/जा.क्र. 271

दिनांक - 29/01/2021

सेवा में,

वरि. लेखा अधिकारी/प्रशासन हिंदी सेल
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी),पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता-700001

विषय : अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 21वें अंक पर प्रतिक्रिया सबंधी ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की अधवार्षिक हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 21वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद !

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री संजय कुमार,डी.ई.ओ. की कविता 'पिता', सुश्री आरती शर्मा, एम.टी.एस. की कहानी 'काली' तथा श्री कुन्दन कुमार रविदास, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'मास्क कथा' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं| पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

श्रीनिवास

(श्री ओ. श्रीनिवास)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

आपके पत्र

एम्मी
Adm. Hindi Cell.

सत्यमेव जयते

संख्या/No. हि० अ०/ले०प०/ पत्रि०/20-21/84

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Principal Accountant General (Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800 001

दिनांक/Date : 05/02/21

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/राजभाषा अनुभाग

(प्रशासन हिंदी सेल)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवम हकदारी),पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स ,कोलकाता-700001

विषय- अर्द्धवार्षिक ई -पत्रिका "वंदे मातरम" के इक्कीसवें अंक का प्रतिभाव।

महाशय,

आपके कार्यालय की अर्द्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "वंदे मातरम" के प्रथम अंक का डिजिटल प्रारूप प्राप्त हुआ,सहर्ष बधाई और धन्यवाद।पत्रिका का यह अंक आवरण की साज-सज्जा ,विषय सामग्री की विविधता और स्तरीय रचनाओं के कारण विशिष्ट बन पड़ा है।पत्रिका के इस अंक में कई ज्ञानवर्धक आलेख हैं जिनमें 'पर्यावरण पर्यटन','भारत का एकीकरण', 'कामकाजी मा', 'सोशल मीडिया"विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।इसके अतिरिक्त वैश्विक महामारी कोरोना पर केंद्रित रचनाएँ "कोरोना को हराना है(कविता)" , "मास्क कथा(लेख),"महामारी कोविड-19के प्रभाव(लेख) अत्यंत रोचक हैं।

पत्रिका अपने प्रथम अंक से ही राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में सशक्त भूमिका का निर्वहन कर रही है।इसका भविष्य और भी उज्ज्वल हो ,यही कामना है।

भवदीय

05/02/2021

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी(हिंदी)

टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।

मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।

शब्दों के लिए अटकिए नहीं।

अशुद्धियों से घबराइए नहीं।

अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	लॉकडाउन के बाद की पहली यात्रा (यात्रा वृतांत)	श्री सुमित कुमार वर्णवाल	1
2.	प्लास्टिक -प्रदूषण (लेख)	श्री आशीष कुमार	3
3.	संघर्ष (कविता)	श्री सुमित कुमार साव	4
4.	आत्मकथा (कहानी)	श्री नबेन्दु दाशगुप्त	5
5.	एक किसान की कहानी (कविता)	श्री राजेश कुमार-II	10
6.	अनुभूति (कहानी)	श्री रेबती रंजन पोद्दार	11
7.	सपने (कहानी)	सुश्री आरती शर्मा	14
8.	खंडित मूर्तियाँ (कहानी)	श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह	18
9.	शादी का कार्ड (कविता)	श्रीमती सुनीता राउत	22
10.	पहचान (कहानी)	श्रीमती आस्था गुप्ता	23
11.	घर की याद (कविता)	मो. इमरान	26
12.	शहादत (कहानी)	सुश्री अलिषा मौर्या	27
13.	माँ की ममता (कविता)	श्री पंकज कुमार गुप्ता	30
14.	लॉकडाउन (कहानी)	श्रीमती तापसी आचार्य बसाक	31
15.	टिफिन बॉक्स (कहानी)	श्री सन्नी कुमार	33
16.	चुनावी-पर्व (लेख)	श्री कुन्दन कुमार रविदास	37
17.	जो हो रहा है हो जाने दो (कविता)	श्री संजय कुमार	41
18.	पोस्टमास्टर (अनुवादित-कहानी)	श्री प्रभास चंद्र दास	42
19.	मजबूर किसान (कविता)	श्री अजय कुमार	49
20.	अस्तित्व के लिए खतरा - प्लास्टिक	श्री जितेन्द्र शर्मा	50
21.	रवींद्र संगीत	श्रीमती सुस्मिता सरकार	55
22.	जीवन राग	श्री चंदन कुमार	58

लॉकडाउन के बाद की पहली यात्रा

यात्रा शब्द सुनते ही मन रोमांच से भर जाता है और अगर यात्रा अपने परिवार के साथ की गई हो तो उस यात्रा का आनंद और भी दोगुना हो जाता है। ऐतिहासिक एवं प्रकृतिक सौन्दर्य से संबन्धित स्थान की यात्रा करना काफी रोचक प्रतीत होती है। ऐसी ही यात्रा का अनुभव प्राप्त करने के लिए मैं अपने पिताजी, माताजी, भैया, भाभी और छोटी बहन के साथ दर्शनीय स्थल राजगीर भ्रमण के लिए निकल पड़ा। जनवरी के शरद ऋतु में हमलोग घर से प्रातः काल में राजगीर के लिए रवाना हुए। मेरे घर से राजगीर की दूरी 184 की.मी. है। सफर के दौरान खेत-खलिहान एवं पहाड़ों की अधिकता थी जिसे देखकर मन आनंद विभोर हो रहा था। खेत- खलिहान के पास रुककर हमलोगों ने तस्वीरें भी ली। भैया-भाभी के लिए यह दृश्य नया था क्योंकि वे

लोग शहर में रहते थे और इन दृश्यों से वास्तविक में उनका सामना नहीं हुआ था। इसलिए वे दोनों काफी उत्साहित थे। हमलोग दोपहर में राजगीर पहुँच गए। हमलोगों ने वहाँ होटल मे कमरे लिए और खाना खाकर राजगीर भ्रमण को निकल पड़ें। जितना राजगीर के बारे में सुना था वहाँ पहुँच कर उससे कहीं ज्यादा अच्छा महसूस हो रहा था। चारों तरफ ऊंचे-ऊंचे पहाड़, पार्क एवं मंदिर दिखाई पड़ रहे थे जो हमें अपनी ओर खींच रहे थे। सर्वप्रथम हमलोग 'विरायतन म्यूजियम' में गए। वहाँ ढेर सारी कलाकृतियाँ थी। वहाँ का वातावरण बहुत शांत था। म्यूजियम के भीतर एक ऐसी मूर्ति थी जो पावरोटी की बनी हुई थी। इस म्यूजियम के आस-पास की जगहों को देखने के बाद हमलोग 'जापानी मंदिर' की ओर चल दिये जोकि म्यूजियम से 2 की.मी. की दूरी पर अवस्थित था। इस मंदिर के अंदर मौजूद सजावट एवं कलाकृतियाँ काफी उत्कृष्ट थी। यहाँ कुछ घंटे व्यतीत करने के बाद हमलोग वापस होटल आ गए।

अगले दिन हमलोग 'ब्रह्मकुंड' देखने गए। कहा जाता है कि यहाँ जल की सात गर्म-धारा पहाड़ों से निकलती है और इसका तापमान लगभग 38 डिग्री सेल्सियस रहता है। इस कुंड में स्नान करना शुभ माना जाता है। सामाजिक दूरी का पालन करते हुए हमलोगों ने भी कुंड में स्नान किया। कोरोना के चलते यह कुंड सुबह में केवल एक घंटा के लिए खुलता था। वहाँ स्नान करने के बाद हमलोगों ने मंदिर में पूजा किया। कुछ जलपान करने केबाद हम सभी टांगा पर सवार होकर 'विश्वशान्ति स्तूप' की ओर निकल पड़ें। इससे पहले हमलोगों ने कभी घोड़ा गाड़ी की सवारी नहीं की थी, यह अनुभव काफी रोचक रहा। यह स्तूप पहाड़ की चोटी पर स्थित है। वहाँ जाने के लिए रोपवे लगा हुआ था। हमलोग रोप-वे के सहारे उस स्तूप तक पहुँच गए। वहाँ पहुँचते ही हमें ढ़ेर सारे बंदर दिखलाई पड़ें। सभी पर्यटक बंदरों को खाना खिला रहे थे। इसी बीच हमने देखा कि एक पर्यटक अपने बोतल से बंदरों को पानी पिला रहा था। मनुष्य और जानवरों का यह दृश्य देखकर मन प्रसन्न हो गया था। हमलोगों ने वहाँ 2 घंटे व्यतीत किए। उसके बाद हमलोग नालंदा जिओग्राफिकल सर्वे ऑफ इंडिया की ओर निकल पड़ें। विश्वशांति स्तूप से यह 16 की.मी. की दूरी पर था। नालंदा विश्वविद्यालय का नाम किताबों में पढ़ा था। स दिन इसे प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। यह भारत का पुराना

विश्वविद्यालय है जिसे बख्तियार खिलजी ने अपने शासन के दौरान नष्ट कर दिया था। हमने वहाँ पर विश्वविद्यालय का अवशेष देखा जो काफी बड़े क्षेत्र में फैला हुआ था। इसे देखने के लिए बहुत सारे पर्यटक अपने-अपने गाइड के साथ वहाँ मौजूद थे। यहाँ कुछ समय बिताने के बाद हमलोग 'कुंडलपुर' की ओर प्रस्थान किए जो नालंदा विश्वविद्यालय से 3 की.मी. की दूरी पर स्थित है। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर स्वामी का जन्म कुंडलपुर में हुआ था और उनकी प्रतिमा मंदिर में मौजूद थी। वहाँ अंदर मौजूद वास्तुकला उत्कृष्ट कोटि की थी। जैन धर्म के पहले तीर्थंकर ऋषभदेव स्वामी की प्रतिमा भी एक भव्य मंदिर में स्थापित थी। इसके बाद हमलोग जल मंदिर (पावापुरी) की ओर चल दिये। यह मंदिर एक बड़े से तालाब के बीच स्थापित था। तालाब में बहुत सारे बतख एवं पंडुब्बी दिखाई दे रहे थे। लोग उन्हें दाना खिला रहे थे। जल मंदिर के अंदर एक ज्योत जल रही थी। हम सभी ने वहाँ कुछ तस्वीरें खिचवाई। रात होने वाली थी इस वजह से हमलोग वापस अपने होटल में आ गए।

सुबह हमलोग पांडु पोखर घूमने गए। वहाँ कई प्रकार के झूले, खेल सामग्री एवं बोटिंग करने के लिए नौका उपलब्ध थे। हमने वहाँ 3-4 घंटे व्यतीत किए। वहाँ पास में ही एक छोटा जू था। हमलोगों ने वहाँ खरगोशों को बादाम खिलाएँ। यह अनुभव काफी रोमांचक रहा। वहाँ घूमने के बाद हमलोग सोन भंडार एवं जरासंघ का अखाड़ा का भ्रमण किया। इसके बाद हमलोग होटल पहुंचे। होटल से चेक आउट करने बाद हमलोग लखीसराय के लिए निकल पड़ें। यह सफर लगभग 84 की.मी. का था। होटल मे कमरा लेने के बाद हमलोग वहाँ सबसे पहले अशोकधाम गए। वहाँ भगवान शिव एवं माता पार्वती के अलग अलग मंदिर थे। हमलोगों ने दोनों मंदिरों में पूजा अर्चना की। इसके बाद हमलोग जमुई की काली मंदिर के तरफ चल दिये। इस मंदिर में साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखा जाता है। इसके बाद हमलोग घर की ओर रवाना होते हैं। रास्ते में एक नदी के ऊपर पुल का निर्माण हो रहा था। इसकी वजह से पुल काफी जाम हो गया था। इस कारण हमें घर पहुँचने में काफी रात हो गई थी।

इस यात्रा से हमारा मन काफी हल्का हुआ था। लंबे समय से लॉकडाउन के कारण हमलोग घर में कैद हो चुके थे। उस यात्रा ने हमें उस उबाऊ भरी ज़िंदगी से निकलने का अवसर प्रदान किया था। प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच रहकर हमारा मानस पटल नयी ऊर्जा से ओत-प्रोत हो गया।

सुमित कुमार वर्णवाल

एम.टी.एस.

प्लास्टिक-प्रदूषण

प्रकृति ईश्वर की अनमोल एवं अनुपम कृति है। परंतु मानव ने अपने भौतिक सुखों एवं इच्छाओं की पूर्ति हेतु इसके साथ निरंतर खिलवाड़ किया है। उपभोक्तावादी मानव पर्यावरण को प्लास्टिक के अंधाधुंध प्रयोग से जिस तरह प्रदूषित करता जा रहा है, उससे सम्पूर्ण वातावरण आहत हो चुकी है।

वर्तमान समय को यदि प्लास्टिक युग कहा जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। टिकाऊपन और विविध आकार-प्रकार में मिलने के कारण प्लास्टिक का प्रयोग जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। गृहपयोगी वस्तुओं से लेकर कृषि, चिकित्सा, भवन-निर्माण, विज्ञान मनोरंजन, अन्तरिक्ष-कार्यक्रमों आदि में भी इसका प्रयोग हो रहा है।

आधुनिक समाज में प्लास्टिक मानव-शत्रु के रूप में उभर रहा है। यह प्रकृति में विलय नहीं होता है, जिसके कारण इसका विस्तारण एक गंभीर समस्या बन चुकी है। जल-प्रदूषण का भी यह एक प्रमुख कारक है, जिसके परिणामस्वरूप जलीय पारिस्थितिकी तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है। खाने योग्य वस्तुओं के अपशिष्ट पदार्थ प्लास्टिक में लपेट कर फेकें जाने से पशु इनका सेवन प्लास्टिक सहित कर लेते हैं, जो नुकसानदेय है, जिससे उनकी मृत्यु तक हो जाती है। इसके निस्तारण हेतु कहीं-कहीं इसे जलाया भी जाता है, जिसमें से विषाक्त गैस निकलती हैं। इस तरह प्लास्टिक भूमि, जल, तथा वायु तीनों तरह के प्रदूषण का कारक है।

हालांकि इसके निस्तारण का सर्वश्रेष्ठ तरीका पुनः चक्रण है, परंतु यह प्रक्रिया भी प्रदूषणकारी है। अतः इसके इस्तेमाल पर पूर्ण प्रतिबंध ही एकमात्र उपाय रह गया है। चूंकि वैश्विक-स्तर पर इसकी शुरुआत हो चुकी है और हमारे देश के कुछ राज्यों में भी इसपर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जा चुका है, किन्तु जब तक व्यक्तिगत स्तर पर इसके इस्तेमाल को बंद नहीं किया जाएगा तब तक इसके दुष्परिणाम से बचना मुश्किल है।

आशीष कुमार
लेखाकार

संघर्ष

पुराने कल में ताजे आज की सौगात करते हैं,
चलो न जुनूनियत की कुछ बात करते हैं।
जिंदगी की जद्दोजहद तो देख ली हमने,
चलो न उठते हैं, लड़ते हैं, हालातों से इंकलाब करते हैं,
तकदीर से दो-दो हाथ करते हैं।
परेशानियों की फेहरिस्त बड़ी लंबी है,
चलो न बुलंद वाली हौसलों का आगाज करते हैं,
पस्त पड़ें उम्मीदों के बीच नया आसमां, नई ऊंचाइयों की बात करते हैं।
चलो न जुनून को जीते हैं, जुनूनियत की कुछ बात करते हैं।
जिंदगी की जद्दोजहद तो देख ली हमने,
चलों न उठते हैं, लड़ते हैं, हालातों से इंकलाब करते हैं,
तकदीर से दो-दो हाथ करते हैं।

सुमित कुमार साव
एम.टी.एस.

आत्मकथा

मैं एक पेड़ हूँ, बरगद का पेड़। आयु 80 के ऊपर। मैंने आज तक किसी को कभी कुछ नहीं कहा, जरूरत नहीं लगा। उम्रभर सुनते और देखते आया। लेकिन आज मुझे आपलोगों को कुछ कहना है। मेरी स्थिति अभी इतनी पीड़ा दायक है कि वार्ता करना भी मुश्किल हो रहा है। फिर भी कहना तो पड़ेगा, नहीं तो कभी और बता नहीं पाऊंगा। ज़िंदगी की शुरूआत से बातें आरंभ करता हूँ। मेरा वर्तमान निवास एक नदी किनारे है। इसी नदी के ऊपर एक पुल है। जो नदी के दोनों ओर की सड़कों को जोड़ता है। यहाँ चारो ओर का वातावरण हरा-भरा है। मुझे एक इंसान ने यहाँ लगाया था, ताकि थके हुए इंसान, राहगीर मेरे शीतल छांव में बैठकर आराम कर सके। वर्षा के समय कोई छाताहीन इंसान कुछ देर तक पनाह ले सके। केवल इंसान ही क्यों पशु – पक्षी भी आश्रय ले सके।

यह नदी पहले तो गतिशील थी। छोटे-बड़े नावों का आना-जाना लगा रहता था। सालभर साफ पानी रहता था। अब यह नदी, नदी नहीं रही। समय के साथ इसकी गति थम सी गई है। इसमें पानी केवल वर्षा के मौसम में ही आता है। अन्य मौसम में केवल कारखाने और आबादी वाले क्षेत्र से छोड़ा गया गंदी पानी रहता है। नदी जल कुंभिओं तथा छोटे पौधे से लबालब होने के कारण एक मैली नाली जैसा बन गई थी। अभी कुछ महीने पहले सफाई हुई, जिससे थोड़ा सुधार आया।

आज मुझे बीते हुए 80 साल के कई बातें, घटनाएँ याद आ रही हैं। तब मैं एक नन्हा सा पौधा था जब उस सज्जन मे मुझे एक ईंट की दीवार से उठाकर यहाँ इस पुल के पास नदी किनारे लगाया था। जड़ से उखड़ने का दर्द तो मैं सह लिया था उस स्नेह भरी हाथों के स्पर्श से। मैं धीरे-धीरे बढ़ता गया। शाखा-प्रशाखाओं से खुदको विकसित करता गया। कुछ ही सालों में, मैं छांव देने लायक बन

गया। मेरी शाखाओं में पक्षियॉं घोंसला बनाने लगी था। आंधी-तुफान का सामना करना भी आदत बन गई।

समय के साथ इस छोटी सी ज़िंदगी में मैंने मानव जीवन में तथा इस इलाके में कितने ही बदलाव देख लिए। यह सड़क पहले तो कच्ची थी। बाद में इसका पक्काकरण हुआ। शरूआत में तो यह सड़क वन वे थी। वाहनों का आवागमन बढ़ता गया तो सड़क का बड़ा होना भी जरूरी हो गया। इसके कारण कुछ साल के अंतराल में तीन बार इसे प्रशस्त करना पड़ा। इसका असर मुझपर भी पड़ा। अब दो बड़े वाहन बिना कच्चा हिस्सा में उतरे द्रुत निकल जाते हैं। लेकिन यह पुल अभी भी केवल एक समय में एक बड़े वाहन के जाने लायक है। अब यही एक समस्या रह गई थी। सड़क पर वाहनों की संख्या इतनी बढ़ गई कि अकसर कतार लग जाया करती है। एक तरफ की गाड़ियॉं खाली होने के बाद दूसरी ओर की गाड़िया जा पाती है।

इस इलाके में कुछ वर्ष पहले जब पहली बार बिजली आई तो लोगों की खुशी देखकर मुझे बहुत आनंद हुया था। नदी के उसपार बिजली बत्ती मेरे नजदीक थी, क्योकि इसपार की बिजली शुरू में मेरे पास तक नहीं आयी थी। बाद में उच्च शक्ति वाले बिजली तार तो मेरे शाखाओं के बीच से और फिर मिट्टी के अंदर से भी गए। इसके बाद आया दूरभाष की व्यवस्था। उस समय मोबाइल फोन तो लोगों की कल्पना में नहीं आया था। दूरभाष की केवल बिछाने के लिए जब खुदाई हुई तो मेरी कुछ जड़ों को काटा गया था। लेकिन लोगों की खुशी के आगे वह दर्द कुछ भी नहीं। क्योकि दूरभाष ने लोगों के बीच के दूरी को कम कर दिया, वे खुशी, दुख-दर्द के साथ आपात स्थिति की खबरे भी आशु लेन-देन में समर्थ हो गए। पहले तो सिर्फ एक कम्पनी थी, बाद में और भी 2-3 कम्पनी वाले केबल बिछा दिये गए।

यहॉं दशकों तक मैं अकेले ही रहा। नजदीक कोई घर भी नहीं था। इसी सड़क के किनारे मेरे छांव में सर्वप्रथम एक व्यक्ति साइकिल मरम्मत की दुकान लगाने आया था। वह अपने औजारों को कपड़े के उपर बिछाकर रखता था, कोइ घर नहीं बनाया था। बाद में उसने एक झोपड़ी बनाई थी। कुछ दिन बाद एक नाई ने एक छोटी सी दुकान खोली। दोनों का व्यवसाय थोड़ा-बहुत चलने लगा।

इसके बाद मेरी दूसरी ओर एक बढ़ई ने एक फर्नीचर बनाने की दुकान खोली। इस सज्जन ने दुकान को दो हिस्सों में बनाया था। एक हिस्सा कमरा था जहॉं वह अपना सामान रखता था और एक हिस्सा बरामदा जैसा जो खुला था। इसी हिस्से में वह काम करता था। वहां वर्षा के समय लोगों को आश्रय आसानी से मिल जाता था। रास्ते के उस पार एक व्यक्ति ने मांस की दुकान खोली थी पर वह नहीं चला। एक लुहार ने उसी के पास अपना दुकान लगाया। वह भी ठीक से नहीं चला। यह सारी मेरी छांव के नीचे की बातें हैं। मेरी छांव के बाहर सड़क किनारे अब तरह-तरह की अनेक दुकाने बनने लगी थी ओर कुछ दुकानें तो चालू भी हो गई थी। कुछ नए घर भी बनें, जिसके कारण आबादी का घनत्व भी बढ़ा। नदी किनारे मेरे पास में एक खटाल भी खोला गया था। उस खटाल की गायें तथा भैंसें मेरी छांव में रहा करते थी। इस तरह से मेरे इर्द–गिर्द हलचल बढ़ गई थी।

मेरी इस छोटी सी ज़िंदगी ने कई प्राकृतिक आपदाएँ भी देखी हैं। मैंने सन् 1971, 1977 तथा 2000 की भयानक बाढ़ को झेला है। 2000 की बाढ़ में तो सामनेवाला रास्ता जगह-जगह पानी में डूब गया था। सभी प्रकार के वाहनों का आवागमन भी बंद हो गया था। उस समय मैंने देखा कि दफ्तर जाने वाले कुछ लोग घरेलू कपड़े पहनकर और अच्छे कपड़े बैग में डालकर पानी के बीच से लोकल ट्रेन पकड़ने के लिए पैदल रेलवे स्टेशन जाते थे। मैंने कई बड़ी आंधी, तूफान भी देखी। उसमें आयला और हाल का अम्फॅान भयानक था। मैं तो सभी तूफानों का सामना कर सलामत रहा। परंतु आस-पास के कई पेड़ उखड़े और टूटे। केले के बगीचे की तस्वीर सबसे दयनीय थी। सभी पेड़ बीचो-बीच टूटकर गिर गए, मानों सभी एकसाथ नतमस्तक होकर प्रणाम कर रहे थे। कच्ची मकानों के छत उड़ें और अनगिनत पंक्षियों के

घोसलें भी टूटे। चारों ओर विनाश का दर्दनाक चित्र था। फिर भी ऐसी स्थिति का सामना करने का लोगों का अटूट हौसला देखकर बहुत खुशी मिली। हाल में एक नई घटना देखने को मिली। मार्च 2000 के अंत में मैंने देखा कि मेरे नीचे पुलिसवालों ने दो-तीन बैरिकेड खड़ा कर दिया। लोगों के आवागमन पर रोक लगाया गया। पहचानपत्र की मांग होने लगी थी। आने जाने वालों से काफी पूछताछ की जा रही थी। सड़क पर वाहनों तथा लोगो का आना-जाना कम हो गया। दो-तीन

पुलिस दिनरात गश्त लगाते रहते थे। बाद में पता चला कि कोविड बीमारी फैलने के कारण यह सब हो रहा है। कई महीने बाद देखा कि वह बैरिकेड हटा दिया गया, मतलब स्थिति में सुधार आया होगा । रास्ते की भीड़-भार बढ़ने फिर से बढ़ने लगी थी।

जिंदगी ऐसे ही चल रही थी। मैं भी आज एक पौधे से वृक्ष बन गया था। तभी एकदिन देखा कि कुछ लोग फीता लेकर पुल और मेरे दिशा में जमीन को माप रहे हैं। दो-चार दिन बाद देखा कि वह साईकिल वाला, नाई, खटालवाला तथा बढ़ई सभी अपना-अपना सामान समेट रहे थे। दूसरे दिन उनलोगों को अपने ही हाथों दुकानघरों को तोड़ते देखा। लोगों के बातचीत से पता लगा कि वर्तमान

पुल के पास दूसरा पुल बनेगा गाडियों की यातायात को सुगम करने के लिए। मन में आया कैसे होगा, मैं जो हूँ बीच में। फिर सोचा शायद मुझे बीच में रखकर पास से बनेगा नया पुल। चिंता होने लगी, डर भी लगने लगी। इसके दो दिन बाद देखा कि कुछ लोग मेरे नीचे आकर रूके। उनके पास कुछ मशीनें थी। फिर वे लोग तैयार होकर मेरे ऊपर मशीन लेकर चढ़ने लगें। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या होने जा रहा है। अचानक भों…ओ..ओ जैसा आवाज सुनाई दिया और मेरी एक शाखा पर नुकीले कुछ घूमने लगा। मैं दर्द से चिल्ला उठा, रोने लगा, मेरा सफेद खून-त्वचा में जमने लगा, पर मशीन न रूका। तब रूका, जब मेरी शाखा मुझसे अलग होकर मिट्टी में जा गिरा। फिर वे दूसरी शाखा में आकर पुन: भों…ओ..ओ…. मैं फिर दर्दसे कांप उठा और रोने लगा। लेकिन, कोई नहीं सुन रहा था मुझे। ऐसे ही मेरी एक और शाखा काटकर गिरा दिया गया। मैं दर्द से तड़पते – तड़पते बीना सोए रात गुजारा। दूसरे दिन वे लोग आए और मेरी बीच वाली मूल शाखा को छोड़कर बाकी सभी शखाएँ काटकर चले गए। तीसरे दिन आकर मूल शाखा को भी काट डाला गया। इस दर्द से तो मैं मृतप्राय हो गया। दर्द की सीमा न रही। उनलोगों की बातों से पता लगा अगले दिन मुझे जड़ से काट दिया जाएगा। अर्थात् मेरा अंत तय है।

आज की रात मेरी जिंदगी की आखिरी रात है। कल मैं कुछ कहने की स्थिति में नहीं रहूंगा, बचूंगा ही नहीं तो कहँगा कैसे। अत: आज मैं मानव जाति से यह पूछना चहता हूँ कि मैंने तो कभी किसी को नुकसान नहीं पँहुचाया। बल्कि आश्रय दिया, छांव दिया। लोगों की खुशी से खुश हुआ, दुख-दर्द से दुखी हुआ। फिर भी इतनी दर्दनाक हत्या। क्या मुझे बचाकर नया पुल नहीं बनाया जा सकता था। जगह तो था। हॉं, शायद थोड़ा घुमावदार होता। पर उतना नहीं जिससे कि असंभव हो जाए। इस छोटी सी समस्या का हल था या नहीं। मानव के आराम के लिए, शान-शौकत के लिए ऐसे तड़पा-तड़पाकर मेरी हत्या करना अनिवार्य था। तो आधुनिक तकनीकी विद्या का क्यों गर्व/अहंकार है। इसी को मानव सभ्यता की प्रगति कहते है। एक मानव ने मुझे बचाने के लिए यहॉं लेकर आया था और वही दूसरे मानव ने अपने आराम के लिए मेरी हत्या कर रहा है। मानव समाज की ऐसी सभ्यता पर गर्व है। अगर है तो मानव को सौ बार मुबारक यह सभ्यता। मेरे पास समय और नहीं है। सुबह हो गई है, वे लोग सभ्यता का आरी लेकर आ रहे हैं। मुझसे यह दर्द और सहा नहीं जा रहा है। बस, एक अंतिम बार भों....ओ...ओ...ओ.... नुकीले दाँतों से काटने का कुछ देर तक असहनीय दर्द, पीड़ा, फिर दर्द के उसपार। अलविदा मानव सभ्यता। खुश रहो, सलामत रहो ... अलविदा सभी साथियों। .... अलविदा ... अलविदा.......।

श्री नबेन्दु दाशगुप्त

सहायक लेखा अधिकारी

एक किसान की कहानी

आज सुनाऊँ एक कहानी उस छोटे से किसान की
देसी गाना उस गबरु जवान की
लथपथ काया पसीने से खूब उसकी चमकती थी
शेर था वो अपने ग्राम का काली रात भी डरती थी
मेहनत करता खेतों में जादू उसके हाथों में
बड़ी निराली महिमा उसकी अन्न ऊगा दे रेत मे
आज सुनाऊँ एक कहानी उस छोटे से किसान की
आई आज खुशियों का दिन घर उसके गूँजी किलकारी
एक कोने में पीपल निकला दूजी बिटिया प्यारी
नई पीपल की कोंपले उसके मन को भांति थी
बिटिया की हँसी ठिठोरी घऱ में खुशियाँ लाती थी
काली रात ना दिन की गर्मी न परवाह अपनी जान की
आज सुनाऊँ एक कहानी उस छोटे से किसान की
उसके खेतों की छटा निराली चारों तरफ हरियाली ही हरियाली
घर घऱ दाना पहुँचाता मिट्टी से फसल उगाता
उस किसान की ये धरा ही उसकी माता थी
आँगन में उसकी कोयल गूँजे मीठी-मीठी तान सी
आज सुनाऊँ एक कहानी उस छोटे से किसान की।
बड़ी हो गई थी उसकी बिटिया पढ़ती थी वो कॉलेज में
सीधी सादी भोली भाली सबसे सुंदर दिखती थी
बेटी का ब्याह रचाने को उसने थोड़ा कर्ज लिया
करुँगा शादी घूम धाम से उसने ऐसा सोच लिया
दिल पर रखकर पत्थर तैयारी की उसने कन्यादान की
आज सुनाऊँ एक कहानी उस छोटे से किसान की।
कॉलेज में था बिटिया को किसी से प्रेम
हो गया था पता उसको दिल उसका खो ही गया
साथ जीने मरने की कसमें उसने खाई थी
पिता के सम्मान की धज्जियां उसने उड़ाई थी
लांघ गयी थी घर की चौखट पिता के अभिमान की
आज सुनाऊँ एक कहानी उस छोटे से किसान की।
छोड़ा बाबुल का आँगन प्रेमी संग वो चली गयी
पता लग गया था उसको प्यार में वो छली गयी
जमाने भर के तानों का जहर था जो घटक गया
डाल के फंदा पीपल पे वो अभिमानी लटक गया
माटी के उस शेर की थी परीक्षा सम्मान की
आज सुनाऊँ एक कहानी उस छोटे से किसान की

राजेश कुमार-II
डी.ई.ओ.

अनुभूति

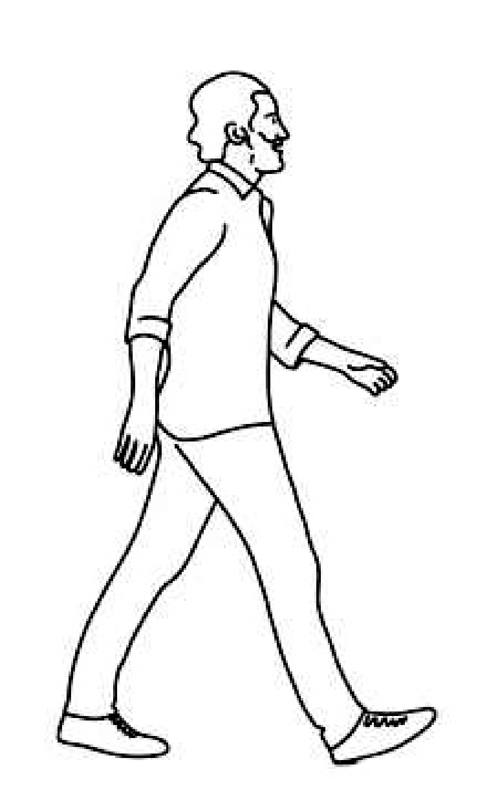

जगदीश बाबू एक 65 वर्षीय सेवानिवृत्त सज्जन पुरुष हैं जो रायपुर शहर में रहते हैं। वे सरकारी सेवा से 5 वर्ष पहले सेवानिवृत्त हुए थे। वे अपनी पत्नी साधना देवी, बेटे किरण, बहू मणिका तथा पोते केतन के साथ रहते हैं। किरण एक प्राइवेट कंपनी में सेवारत है तथा केतन कक्षा 5 में पढ़ता है। मणिका घर के कार्य तथा केतन की पढ़ाई कराने में व्यस्त रहती हैं।

जगदीश बाबू की दो बेटियाँ हैं। दोनों की शादी हो चुकी है। एक बेटी किसी सुदूर शहर में रहती है तथा एक इनके घर के बगल वाली गली में रहती है।

साधना देवी अपनी बहू की बहुत मदद किया करती है। वह उसके घर से जुड़े कामों में हाथ बटाया करती हैं। साथ ही घर से संबंधी सभी मामलोंपर नजर भी रखती हैं।

समान्यतः जगदीश बाबू और उनकी पत्नी बीमार पड़ते नहीं हैं। वे अपने स्वास्थ्य का अच्छे से ख्याल रखा करते हैं। परंतु बीमार होना न होना किसी के हाथ में तो नहीं होता है। तीन दिन पहले उनकी पत्नी के पेट में अचानक से दर्द होने लगा। किरण ने आनन-फानन उन्हें हॉस्पिटल में भर्ती करवाया। दो दिनों के इलाज के बाद आज उनकी तबीयत में सुधार हुआ। उनका दर्द काफी कम हुआ और उन्हें अच्छा महसूस हो रहा था।

आज जगदीश बाबू अपनी पत्नी से मिलने शाम 4 बजे हॉस्पिटल जाने वाले हैं। उन्हें सुबह जल्दी उठकर सारे काम निपटाने के बाद शाम को हॉस्पिटल जाना था। इस कारण वे रात में अच्छे से सो नहीं पाएँ थे। वे हॉस्पिटल जाकर अपनी पत्नी से मिलने के लिए काफी व्याकुल थे।

मानव की व्याकुलता की तीव्रता उसके उम्र से नहीं परखी जा सकती है। अगले दिन वे सुबह

जल्दी उठ गए। सुबह की चाय की चुस्की लेने के बाद वे कपड़े के चयन के बारे में सोचने लगे। आज पत्नी से मिलने जो जाना था। उनकी पत्नी की तबीयत में सुधार होने पर वे बहुत प्रसन्न भी थे। लेकिन समस्या तो अब होने वाली थी। वे कभी भी अपनी अलमारी को हाथ नहीं लगाएँ थे। क्योंकि उनकी पत्नी हमेशा अलमारी से उनके कपड़े निकाल कर दिया करती थी। आज उनको हॉस्पिटल जाना है लेकिन वे कपड़े की दुविधा में उलझ गए। अंततः वे अलमारी खोलने के लिए हाथ बढ़ाते हैं। किसी तरह से वे एक पायजामा और एक पंजाबी कुर्ता निकालने में सफल होते हैं। उनके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान आ जाती है।

जब वे पायजामे को देख रहे थे तभी उनकी नजर एक जगह ठहर जाती है। उन्होनें पायजामे के घुटने के पास का हिस्सा फटा हुआ पाया। उन्होनें फुसफुसाया "अब क्या होगा!" फिर उन्हें याद आता है "ओह! मेरी छोटी बेटी तुलिका मुझे आज हॉस्पिटल ले जाने वाली थी। उसे फोन करके बोलता हूँ कि थोड़ा जल्दी आ जाए और मेरे पायजामे को सिल दे।" समस्या का समाधान सूझते ही वे राहत की सांस लेते हैं।

वे तुरंत तुलिका को फोन करके पूछते हैं "क्या आज माँ से मिलने के लिए तुम मेरे साथ हॉस्पिटल चल रही हो?" तुलिका ने जवाब दिया "नहीं पापा आज मैं आपके साथ नहीं चल सकती। क्योंकि आज दोपहर में आपके जमाई दिल्ली के लिए रवाना होने वाले हैं। मुझे माफ करना पापा लेकिन मैं माँ से मिलने कल अवश्य जाऊँगी।"

जगदीश बाबू फोन रख देते हैं। वे उस पल को याद करते हैं जब तुलिका अपनी माँ के बगैर एक क्षण भी नहीं रह पाती थी। वह रात में अपनी माँ के बिना सो भी नहीं पाती थी। जगदीश बाबू थोड़ा उदास हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि काश तुलिका आती तो उनका पायजामा भी सिल जाता। अंत में उन्होनें पायजामे को खुद से सिलने का निर्णय लिया। लेकिन फिर से एक समस्या उत्पन्न हो जाती है। पायजामे को सिलने के लिए सुई-धागे की जरूरत होती है। जगदीश बाबू सुई-धागे की तलाश में लग गए। लेकिन बहुत प्रयास करने के बाद भी निराशा ही हाथ लगी। वे हताश हो जाते हैं। उनको

याद आता है “आज मेरे बेटे के सास-ससुर भी आने वाले हैं और मैं फटे कपड़े पहन कर उनके सामने कैसे जाऊँ?” फिर वे सोचते हैं “अच्छा पायजामा तो घुटने के पास से फटा है, मैं उसे पंजाबी कुर्ता से ढ़क लूँगा। किसी को पता नहीं चलेगा।'' पायजामे को सिलने के लिए मणिका को कहना उन्होनें उचित नहीं समझा। मणिका को घर के काम का बोझ पहले से ही अधिक था। इस तरह से उन्होनें अंत में उस फटे हुए पायजामे को ही पहनने का निर्णय लेते हैं।

वे जल्दी से अपना नाश्ता पूरा करके हॉस्पिटल जाने के लिए तैयार हो गए। मुलाक़ात करने का समय 4 बजे शाम से 6 बजे शाम तक का ही था। वे कुछ समय पहले ही पहुँचने का निर्णय लेते हैं। वे शाम 3.45 बजे हॉस्पिटल पहुँच जाते हैं। वे देखते हैं कि उनके बेटे केसास-ससुर वहाँ पहले से ही पहुंचकर उनकी पत्नी से मिलने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे उनलोगों से मिलते हैं और बातें भी कर रहे थे। वे ध्यान दे रहे थे कि खड़े रहने के क्रम में उनके फटे हुए पायजामे पर उनलोगों की नजर न पड़ जाए। इसमें अभी तक उन्हें कामयाबी हासिल हुई थी।

शाम 4 बजे मिलने का समय शुरू हुआ। वे लोग उस कमरे में प्रवेश कर जाते हैं जहां साधना देवी भर्ती हैं। वे लोग सभी बिस्तर के बगल में रखे कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। जगदीश बाबू एक स्टूल पर बड़े ही ध्यान से बैठते हैं ताकि उनकी फटे हुए पायजामे की पोल न खुल जाए। वे अपने दोनों पाँव सटाकर बैठते हैं और घुटनों के ऊपर पंजाबी कुर्ता फैला देते हैं।

वे अपनी पत्नी से पूछते हैं, “तुम आज कैसा महसूस कर रही हो।” जवाब में साधना देवी बोलती हैं, “ अलमारी में इतने सारे कपड़े पड़ें हुए थे और आप फटा हुआ पायजामा पहनकर आ गए हैं।“ साधना देवी की बात सुनकर जगदीश बाबू हक्के-बक्के हो गए। वे अंदर ही अंदर खुद से सवाल पूछ रहे थे आखिर साधना को सच्चाई की अनुभूति कैसे हुई।

रेबती रंजन पोद्दार

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सपने

रजनी आज बहुत खुश नजर आ रही है। बड़े सवेरे ही उठकर अपने काम निपटा कर सीमा दीदी के घर चल दी है। आज उसने सोच रखा है कि दीदी के घर के सारे काम जल्दी-जल्दी पटा कर बाज़ार जाएगी। शाम में जल्दी घर लौटकर खीर बनाएगी और पूरी बस्ती वालों को खिलाएगी। आखिर इतनी बड़ी खुशखबरी जो है .... और फिर सभी उसकी इस खुशी में शामिल जो है। कितना कुछ किया है मोहल्ले वालों ने उसकी और उसकी बेटी मीना के लिए।

जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाती रजनी के दिमाग में पूर्व की सारी घटनाएँ एक-एक कर आने लगती है। अपनी जाति से अलग किसी दूसरे जाति के युवक के साथ विवाह करना उस जमाने में शायद सबसे ज्यादा घृणित कार्य था। पर रजनी आरंभ से ही लीक से हटकर कार्य करने वालों में से रही। इसी कारण ही तो वो उस वक़्त अपने गाँव की सबसे शिक्षित महिला था। जहां एक तरफ गाँव की सारी महिलाएं पुरानी परम्पराओं को भगवान का आदेश मान कर,

आँखें और कान बंद कर अपने बड़े-बुज़ुर्गों की बातों का अनुसरण करती वहीं रजनी शुरू से ही हर बात में क्यों ? और कैसे? जैसे न जाने कितने ही सवालों के जवाब जानने की कोशिश करती। जब तक उसे संतोषजनक उत्तर नहीं मिलता तब तक वह घरवालों और पड़ोसियों से सवाल पूछ-पूछ कर सबकी नाक में दम किए रहती। पर फिर एक वक़्त ऐसा भी आया जब सब उसे उसके सवालो के जवाब देने के बदले चुप रहना सिखाने लगे। यह बात रजनी झेल नहीं पा रही थी। ऐसे में अकस्मात उसकी मुलाक़ात विजय से हुई। विजय पास के ही शहर में पढ़ने के लिए आया था और कभी कभी रजनी की दुकान से अपनी दैनिक आवश्यकता की वस्तुएँ खरीदने आया करता था। जहां रजनी की उससे मुलाक़ात हो जाती थी। वह अक्सर रजनी को कुछ-न-कुछ पढ़ते हुए ही पाता

था। पढ़ने में उसकी रुचि देखकर विजय अक्सर उसके लिए कई किताबें ले आता था। रजनी के माँ-बाबा भी अपनी बिटिया को पढ़ता देख बड़े खुश होते थे। विजय भी रजनी की पढ़ाई में यथासंभव मदद करता था। पर फिर एक दिन विजय की नौकरी लग गयी और उस दिन.....।

उस दिन रजनी बहुत खुश थी। विजय उसके साथ जमीन पर बैठा उसका साथ मांग रहा था। उसे इस जहां की सारी खुशियाँ देना चाहता था। रजनी के मन में तो उसके लिए भावनाएँ थी ही पर फिर भी उसने इस परिस्थिति की कल्पना भी नहीं की थी क्योंकि उसे पता था कि उसका समाज इसकी आज्ञा कभी नहीं देगा और उसके माँ-बाबा समाज के विरुद्ध कभी नहीं जाएँगे। उसने ये बात विजय के सामने रखी भी थी पर विजय ने उसे सबकुछ ठीक करने का आश्वासन दिया था। पर हुआ वही जिसका रजनी को डर था। माँ-बाबा, परिवार, समाज सबने रजनी को दुतकारा, धमकियाँ दी, पर वो विजय था जिसने रजनी का हाथ थामे रखा। रजनी ने भी अपने भविष्य को विजय के हाथों में सौंप दिया और सच में ...... विजय जब तक रहा रजनी बहुत खुश थी। दो कमरों के भाड़े वाले घर में अपनी नन्ही बच्ची मीना के साथ रजनी और विजय बहुत खुश थे। पर फिर एक दिन अचानक ही सब कुछ बदल गया....। रजनी की दुनिया उजड़ गयी। ऑफिस से घर आते वक़्त विजय एक सड़क दुर्घटना में चल बसा। रजनी को तो कई महीनों तक कुछ होश ही न रहा कि कैसे उसे और उसकी छोटी बच्ची को घर से निकाल दिया गया। उसने एक-एक कर अपनी नज़रों के सामने अपने छोटे से संसार की वस्तुओं को बिकते हुए देखा। पर ये रजनी का हृदय ही था जिसने कभी उसे किसी के सामने हाथ फैलाने को मजबूर न किया। न जाने कितने ही दिन और रातें उसने और मीना ने बिना एक अन्न के दाने के गुज़ारे थे। मीना बिटिया भी तो कितनी समझदार रही शुरू से..।

दूसरे बच्चों के नए कपड़े-खिलौने देखकर उसका भी बालमन मचलता होगा....। पर फिर भी उस बच्ची कभी किसी से कुछ नहीं मांगा। कितनी छोटी उम्र से ही बड़ों जैसी समझदारी आ गयी थी मीना में। फिर माँ-बेटी को इस एक कमरे के सीलन भरे घर का सहारा मिला। पर सौभाग्यवश रजनी और मीना को बस्ती वालों में ही अपना सम्पूर्ण परिवार मिला था। लोग ठीक ही कहते है – "ईश्वर एक हाथ से अगर कुछ छीनता है तो दूसरे हाथ से बहुत कुछ सौंप देता है। ये तो बस खोने या पाने वाले का नज़रिया होता है जो उनके दुख या सुख का कारण बनता है।"

रजनी और मीना की इस बस्ती में हर रिश्ते की जरूरत पूरी हो गयी थी। बस्तीवाले बहुत अच्छे थे। उन्होने हमेशा रजनी और मीना की यथासंभव मदद की। रजनी यहाँ आकार अपने सारे गमों को भूलने लगी थी। थोड़ी बहुत पढ़ी-लिखी होने के कारण रजनी ने इस बस्ती के बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया था। धीरे-धीरे बस्ती के सभी बच्चे-बूढ़े, महिलाएं रजनी के पास पढ़ने आने लगे। रजनी के कारण बस्ती वालों की जिंदगी में बहुत बदलाव होने लगा था। पर ये तो बस एक सामाजिक कार्य था। एक इंसान के जीवन को मुख्य रूप से आर्थिक जरूरतें ही प्रभावित करती है। रजनी को भी तो आर्थिक सहायता की आवश्यकता थी, जोबस्ती के लोगों को पढ़ाने से पूरी नहीं हो सकती थी। मीना के भविष्य को लेकर चिंतित रजनी ने फिर घर-घर जाकर काम करना शुरू किया क्योंकि पढ़ी-लिखी होने के बावजूद रजनी के पास कोई डिग्री नहीं थी। इस कारण किसी भी संस्थान में उसे नौकरी भी नहीं मिली। अतः उसने घर घर जाकर खाना बनाने, कपड़े धोने इत्यादि कार्य करने शुरू किए। मेहनती तो वह शुरू से ही थी साथ ही बचपन से ही अभावों में पलने के कारण रजनी में कम लागत में अपना घर चलाने का हुनर था। फलतः वह धीरे-धीरे मीना के भविष्य के लिए कुछ-कुछ पैसे जमा भी कर लेती थी। उसे बहुत शौक था कि वह नहीं पढ़ पाई तो क्या हुआ अपनी बिटिया मीना को वह डॉक्टर बनाएगी।

माँ की प्रतिमूर्ति मीना भी अत्यंत मेहनती एवं हंसमुख स्वभाव की थी। जब से मीना ने होश संभाला था अपनी माँ को उसके लिए जी-तोड़ मेहनत करते देखा था अतः उसने भी कभी अपनी माँ को शिकायत का मौका नहीं दिया एवं पूरी लगन से पढ़ाई में जुटी रही। आज इसी का फल है कि मीना को इस शहर के सबसे प्रख्यात मेडिकल कालेज “दुर्गा मेडिकल कालेज” में पढ़ने के लिए स्कौलरशिप मिला था। मीना और रजनी दोनों आज बहुत खुश है। उनके साथ ही साथ पूरी बस्ती के लोग भी बड़े खुश है। आखिर पहली बार इस बस्ती का कोई इतनी उच्च शिक्षा के लिए इतने बड़े कॉलेज में पढ़ने जो जा रहा था।

“क्या बात है रजनी? आज तू बड़ी खुश नज़र आ रही है..... । और आज इतनी सुबह-सुबह क्यों आ गयी ... ?” दरवाजा खोलते ही सीमा दीदी ने पूछा। रजनी ने सीमा दीदी के पैर छू लिए और खुशी-खुशी सारी बातें कह डाली।

“देख..... मैं न कहती थी कि अपनी मीना बिटिया एकदिन जरूर तेरा नाम रोशन करेगी।” सीमा दीदी ने अपनी ऐनक उतारते हुए कहा। खुशी के मारे उनकी भी आँखें भर आई थी। रजनी उनके घर में उस समय से काम करती आई थी जब उनका भरा पूरा परिवार एक साथ रहा करता था। फिर बेटा-बहू को लेकर लंदन चला गया और उसके कुछ सालों के बाद उनके पति भी उन्हें छोड़ भगवान को प्यारे हो गए। ऐसे एकाकी जीवन में रजनी ने उनका बहुत साथ निभाया। कभी-कभी वह अपनी बिटिया मीना को भी ले आती जिसके साथ खेलकर सीमा जी अपना एकाकीपन भूल जाति। मीना की शिक्षा प्राप्ति में उनका भी बहुत बड़ा योगदान था। न जाने कितनी ही बार उन्होने रजनी को अधिक पैसे देकर उसकी सहायता की थी। रजनी भी उन्हें अपनी बड़ी बहन मानकर यथासंभव उनके दुख-दर्द बाँट लिया करती थी।

आज सबकी दुआओं और प्यार का परिणाम आया था। मीना की कामयाबी ने रजनी के सपनों को पंख लगा दिये थे। कई बरसों बाद रजनी को यूं गुनगुनाते सुना सीमा दीदी ने और आगे बढ़कर उन्होने उसकी बलैयां ले ली। रजनी हँसते-मुस्कुराते और भविष्य के सुनहरे सपने सँजोते अपने काम को और जल्दी-जल्दी निपटाने लगी थी।

आरती शर्मा
एम.टी.एस.

खंडित मूर्तियाँ

सुबह उठते ही कोरोना। कुछ दिनों से यह सब सुनकर निशा का मन ऊब चुका था। लॉकडाउन लगने से पूरा देश एक तरीके से रुक सा गया था। इसी बीच सबकी सुरक्षा का ध्यान रखते हुए करीब 2 महीने बाद ऑफिस का रोस्टर भी बन गया था। सुबह से जल्दी- जल्दी तैयारी कर निशा और संजू दोनों ऑफिस के लिए निकल चुके थे।

रास्ता बस शुरू ही हुआ था। चूंकि पहले यही रास्ता लोकल ट्रेन से नापा जाता था तो दूरी की चिंता कम होती थी। लेकिन गाड़ी से जल्दी निकलना पड़ता था। सुबह जल्दी उठने के कारण दोनों ही ऊंघ रहे थे। बाज़ार की भीड़ से निकल कर बस अब हाईवे आने ही वाला था। हाईवे पर गाड़ी मुड़ी ही थी कि चाय की एक छोटी दुकान के पास निशा ने कुछ मूर्तियाँ देखी। उन मूर्तियों को देख कर उसे ऐसा लगा जैसे विसर्जन की विधि कर उन्हे बस वैसे ही रख दिया गया था।

लॉकडाउन का सिलसिला अब भी जारी था। ऑफिस में रोस्टर के अनुसार ही उपस्थिति दर्ज़ हो रही थी। आज रोस्टर अनुसार निशा की बारी थी- ऑफिस जाने की। लॉकडाउन की वजह से ट्रेन बंद होने से रास्ते पर निजी गाड़ियों का एक हुजूम उतर चुका था। असामान्य भीड़ के कारण दो घंटे का सफर तय करने में कभी तीन घंटे लगते, कभी चार। यही सोच आज संजू के साथ निशा सुबह तड़के ही निकल पड़ी। चलते- चलते उस चाय दुकान के पास निशा की नजर फिर उन मूर्तियों पर गयी। उस दिन और आज में बस इतना ही अंतर था कि उनके चेहरों की उदासी और गहरी हो चुकी थी और श्रृंगार की चमक थोड़ी और फीकी।

आज निशा घर पर ही थी। कोरोना की वजह से बाहर जाना एकदम बंद था। बस घर से ऑफिस और वापस घर। शाम का समय था। घर पर बैठे उसे कुछ नया नहीं सूझता। मन बदलने के लिए छत पर चली जाती। अचानक उसे कुछ बच्चों का शोर सुनाई दिया। बच्चे एक साइकल पर गणेश जी की एक छोटी सी मूर्ति ले जा रहे थे और अपनी पुरजोर आवाज़ में विसर्जन की कुछ लाईने बोल रहे थे। निशा को वह शोर अच्छा लगा। इस असामान्य होते जीवन में पहले वाली थोड़ी रौनक

दिखी। उसे अचानक उन मूर्तियों की याद आ गयी। उसे लगा कि उनका भी तो कुछ यही अधिकार था, उनकी यात्रा का भी तो गंतव्य ऐसा ही होना चाहिए था। खैर, माँ ने नीचे आने की आवाज़ लगाई और निशा की तंद्रा पर विराम लग गया।

ऑफिस आने- जाने वाले उस रास्ते से उन दोनों की बहुत अच्छी पहचान हो चुकी थी। अब सिर्फ उस मोड़ पर ही नहीं बल्कि, आते- जाते कई जगहों पर उसे वैसी ही खंडित मूर्तियाँ दिखाई देती।

आज ऑफिस से लौटते दोनों को शाम हो चली थी। शहर से बाहर निकल कर हाइवे की ओर बढ़ते हुए शाम की लालिमा अब काली होने लगी थी। गाड़ियों की भीड़ और शोर से दोनों ही तंग आ चुके थे, पर उपाय भी क्या था? गाड़ी के एफ़ एम में कोई पुराना गीत बज रहा था, जिसे दोनों चुपचाप सुन रहे थे। सप्ताह के लगभग तीन दिन उनके ऐसे ही बीतते। निशा को तो बस उस समय का इंतज़ार रहता जब वो शहर की भीड़ और शोर को पीछे छोड़ हाइवे पर आ जाते।

चलते- चलते एक सिग्नल पर उनकी गाड़ी रुकी। वो सिग्नल खुलने में थोड़ा ज़्यादा समय लगता। रास्ते के किनारे निशा ने कुछ बूढ़ों को टहल कर आते देखा। उस झुंड में करीबन आठ से दस वृद्ध रहे होंगे। वो सभी रास्ता पार कर इकट्ठे एक बिल्डिंग में जा रहे थे। निशा ने उस बिल्डिंग का नाम पढ़ना चाहा पर तब तक सिग्नल खुल चुका था और संजू ने गाड़ी आगे बढ़ा ली।

दो दिनों के बाद निशा की बारी फिर आई। रास्ते के उस मोड़ पर पहुँच कर उसने उस बिल्डिंग को पहचानने की कोशिश की। गोधूली 'सीनियर सिटीजन होम' नाम था - उस बिल्डिंग का। अपने नाम के ही अनुरूप उस बिल्डिंग का रंग और रूपरेखा दोनों ही ढल चुके थे।

बचपन में नाना के घर दुर्गा पूजा हुआ करती थी। जब तक माँ को मूर्तिकार के पास से घर ना लाया जाता, छोटी निशा माँ, नानी से सवाल पूछती रहती कि कब वो माँ को देख सकेगी, उन्हे छू सकेगी? माँ तो ज़्यादा ना बताती पर नानी उसकी बेचैनी भाप उसके सवालों के जवाब देकर उसे समझाने की पूरी कोशिश करती। माँ आए तो उन्हे झट कोई छू नहीं सकता ना ही बार- बार देख ही

सकता है। छोटी निशा तो कितना समझती पर उसे इतना तो समझ आ ही गया था कि उसे माँ के बहुत नजदीक नहीं जाना है।

कोरोना का भय अब लोगों में कम होने लगा था। कुछ सीमाओं के साथ जीवन को सामान्य करने के लिए लोकल ट्रेन भी चलने लगी। निशा गाड़ी से आते- जाते पूरी तरीके से थक चुकी थी। सो उसने अब ट्रेन से जाने का मन बना लिया। जब से निशा का ध्यान इन मूर्तियों पर गया था तब से हर जगह वह ऐसी मूर्तियों को चिन्हित करने लगी थी। स्टेशन के किनारे भी उसे बहुत सी मूर्तियाँ विसर्जन के इंतज़ार में खड़ी दिखती।

भागते- भागते भी आज उसे थोड़ी देर हो गयी। झट टिकट कटा वह प्लेटफॉर्म एक से चार के लिए दौड़ पड़ी थी कि अचानक उसका ध्यान एक बूढ़ी भिखारन पर पड़ी। उसे एक झटका सा लगा। यह तो वही भिखारन है जिसे वह शायद अपने कॉलेज के दिनों से देख रही थी। चूंकि उसकी ट्रेन बस अब आने ही वाली थी, इसलिए वह भागते हुए चार नंबर प्लेटफॉर्म पर गयी। जैसे- तैसे वह ट्रेन में उठी और एक कोने की सीट लेकर बैठ गयी।

ट्रेन ने धीरे- धीरे अपनी गति पकड़ ली। निशा ने भी कुछ देर आँखें बंद कर आराम करना चाहा। थोड़ी देर तो उसका मन रोज़ की इस भागा भागी के बीच शांत हुआ पर यह शांति ज़्यादा देर नहीं रह पायी। उस बुढ़िया का चेहरा वह भूल नहीं पा रही थी। उसका भीख माँगने का अंदाज़ आज भी उसे अच्छे से याद है। पहले और अब में बस यही अंतर है कि उसके चेहरे पर समय के पदचिन्ह कुछ ज़्यादा ही नज़र आ रहे हैं।

इधर ठंड भी कुछ ज़्यादा ही बढ़ी हुई थी। छुट्टी का दिन था सो निशा ने आज थोड़ा आराम करने का मन बनाया था। छत पर धूप सेंकते हुए आज उसे उन खंडित मूर्तियों, उस वृद्धाश्रम के बुजुर्गों और भीख मांगती वह बुढ़िया का ध्यान बार- बार आ रहा था। जीवन की सार्थकता के लिए क्या एक संपूर्ण अंत आवश्यक नहीं? जब तक मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा न हो, पूरे रीति – रिवाज से पूजा- अर्चना न हो तब तक तो सबके लिए पूजनीय होती है पर क्या इतना काफी है? जितने हर्षोल्लास से उन्हे लाया जाता है, उतने ही उत्साह से उनका विसर्जन कर उनकी उस छोटी सी यात्रा को पूरा करना

भी तो आवश्यक है। उस बूढ़ी भिखारन, वो सभी वृद्ध जिनकी जीवन यात्रा अब तेज़ी से अपने गंतव्य की ओर बढ़ रही है वह चक्र क्या ऐसे ही पूरा होगा? उन्होने भी तो अपनों से कभी उसी विसर्जन की आशा की होगी जिसमे उनके जीवन रूपी प्रतिमा को सुख, शांति और सम्मान के जल में विसर्जित किया जाता। उन खंडित मूर्तियों और उनमें यही तो समानता है कि उनका ढलता जीवन भी उन हाथों का ही इंतज़ार कर रहा है जो उन्हें अकेलेपन की धूप से उठा कर एक अंतिम विसर्जन दे सके।

ढ़ोल की आवाज़ और जय – जय के शोर से निशा का ध्यान टूटा। छत से रास्ते की तरफ देखा कि कुछ बच्चे एक ठेले पर मूर्तियों को विसर्जित करने ले जा रहे थे। विसर्जन की उस यात्रा ने निशा के उदास होते मन को थोड़ी राहत दी।

प्रियंका संजीव सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

शादी का कार्ड

देख शादी का कार्ड शरीर से निकले पसीना,
न्योता निभाते – निभाते मुश्किल हो गया जीना,
रंग – बिरंगे ढेरों कार्ड रखे हुए हैं सिराहना,
तुम ही बोलो एक ही दिन कैसे हो जाना?

एक से बढ़कर एक कार्ड हैं बाज़ार में,
दस – बीस कौन पूछे, बिकते हैं हजारों में।
कार्ड के ऊपर में लिखा है – शादी में ज़रूर आना,
सौ बातें सुननी पड़ेंगी, अगर किया गया बहाना,

ऐसे कामों में न हैं प्रबंध वेतन भत्ता का,
एक कार्ड बनारस का दूसरा रखा है कलकत्ता का,
देख शादी का कार्ड शरीर से निकले पसीना,
न्योता निभाते – निभाते मुश्किल हो गया जीना।

कोरोना काल में भी मिल गया शादी का कार्ड,
क्या करें- क्या नहीं ये है सवाल।
जाएँ या नहीं, कौन ये बताए?
बड़ी मुश्किल है- इसे कैसे सुलझाए?

हाथ में सैनिटाइज़र, चेहरे पे मास्क चढ़ाये,
हाथ में लिए न्योता, हम भी जग की रीति निभाए।
अब न डर है और न घबराहट,
शादी का कार्ड तो खुशियों की है आहट।

सुनीता राऊत
एम.टी.एस.

पहचान

अरे बहू! ज़रा इधर तो आना, देखो तो तुमसे मिलने शर्मा आंटी आई हैं? रिया अपने सर पर पल्लू डालते हुए लिविंग रूम में आई। उसने शर्मा आंटी के पैर छूएँ और फिर सासु माँ के। दरअसल रिया ने अपने मायके में ये प्रथा देख रखी थी कि अगर किसी के पैर छूने हैं तो साथ में जितने भी लोग बैठे रहते हैं उनके भी छूने होते है। बल्कि वह पैरों को महज छूकर नहीं बल्कि दबा के प्रणाम करती थी। “अरे विमला तुम्हारी बहू के प्रणाम करने के तरीके से तो मेरे पैरों का दर्द गायब हो जाता है। कहाँ से लायी हो इतनी संस्कारी बहू?” शर्मा आंटी ने कहा। रिया पूरे मोहल्ले में मशहूर हो गयी थी। अभी बस महीना भर ही हुई थी उसकी शादी की लेकिन उसकी सुंदरता और गुणों का गुण-गान हर कोई कर रहा था। जो भी उससे मिलने आता उसकी मुस्कान, आदर-सत्कार पर मोहित होकर ही जाता था। विमला जी की सारी सहेलियों ने उनसे कह दिया था की हमें भी ऐसी ही बहू चाहिए, अगर कोई मिले तो ज़रूर बताना। विमला जी मन ही मन काफी प्रसन्न होती थी।

रिया महज 21 साल की थी। तेज़-तर्रार, सुंदर नैन-नक्श, कोई भी परेशानी चुटकियों में हल कर देने वाली। प्रशांत की तो जैसे लौटरी लग गयी थी। आज तक कभी किसी लड़की से बात भी नहीं की थी। लड़को के स्कूल, फिर कॉलेज अब ऑफिस में भी किसी से बात करने की हिम्मत नहीं हुई। फिर जब रिया जैसी लड़की से अरैंज मैरेज हुई तो जैसे उसके जीवन की सारी कमी दूर हो गयी थी। उसके दोस्त भी मज़ाक मज़ाक में उसे चिढ़ाया करते थे कि “अबे तेरे तो भाग्य ही खुल गए!” यह सब सुनकर उसे खुद पर गर्व होता था। और हो भी क्यों न? एक लड़के को अपनी जीवनसंगीनी से जो भी उम्मीदें होती हैं, रिया उन सभी में खड़ी उतरी है। माँ-बाबूजी की सेवा, घर का ध्यान और बुद्धिमता में भी उसका कोई जबाब नहीं था।

रिया पढ़ाई में काफी होशियार थी। सिविल-सर्विसेज की तैयारी कर रही थी। सब कहते थे कि रिया को सफलता अवश्य मिलेगी। लेकिन शायद किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। माता-पिता की अकाल मृत्यु ने रिया और उसके बड़े भाई राजेश को अकेला कर दिया। राजेश ने रिश्तेदारों के दवाब में आकर रिया का ब्याह कर दिया। रिया को पा कर सबलोग काफी खुश थे, उसकी ननद के अलावा। उसकी ननद सुषमा जोकि उम्र में उससे काफी बड़ी थी। अपने पति एवं बच्चों के साथ सूरत में रहती थी। वो इस शादी से नाखुश थी। उसका कहना था कि रिश्ता अपनी हैसियत के हिसाब से करना चाहिए। दरअसल रिया एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखती थी। इसिलिए वो रिया से नाखुश रहती थी। दिन भर अपनी माँ से हर बात की जानकारी फोन पर लिया करती थी। जब भी माँ के मुँह से उसकी तारीफ सुनती

तो आग बबूला हो जाती थी। परंतु विमलाजी को उसकी बातों का कोई असर नहीं पड़ता था। उन्होने रिया को कई बार जांचा-परखा था। और हर बार उम्मीद से ज़्यादा ही पाया था।

रिया को जब भी घर के कामों से फुर्सत मिलती तो वह पढ़ाई करने बैठ जाती थी। इसमें सबलोग उसकी मदद किया करते थे। प्रशांत ने माँ-बाबूजी जी की सहमति से घर में एक नौकरानी की व्यवस्था भी कर दी थी। जब यह बात सुषमा को पता चली तो उसने माँ को फिर भड़काना शुरू कर दिया। उसने कहा "माँ तुम समझती नहीं हो अभी खुद काम करना बंद किया है, और घर में नौकरानी भी रख ली है, कुछ दिनों में तुम्हें नौकरानी बना देगी। और तुमने भी तो कभी नौकरानी नहीं रखी। तुम बहुत भोली हो माँ!" इसपर विमलाजी ने सुषमा की मंशा भाँपते हुए कहा, "उसकी परीक्षाएँ नजदीक हैं, और उसने नहीं कहा घर में नौकरानी रखने को बल्कि यह निर्णय मैंने, तुम्हारे बाबूजी और प्रशांत ने मिलकर लिया है। और जहां तक बात है नौकरानी की तो वो तो तुमने भी रखा हुआ है, और न तुम्हें कोई पढ़ाई करनी है और न कोई परीक्षा देनी है।" इस बात पर सुषमा कोई जवाब न दे सकी। रिया ने अपनी सासु माँ की यह बात सुन ली। जैसे ही सासु माँ ने फोन रखा रिया ने उन्हे दौड़कर गले लगा लिया और खूब फूट-फूट कर रोने लगी।

उसने रोते हुए अपनी सास से कहा, "भले ही भगवान ने मुझसे मेरे माँ- बाप छीन लिए हैं लेकिन सास-ससुर के रूप में फिर से माँ-बाप की छाया वापस कर दी है।" विमलाजी ने उसका सिर सहलाते हुए कहा "हमने तुम्हें बस बोलने के लिए बेटी नहीं माना है बल्कि दिल से अपनाया है।" अपनी सास की ऐसी मानसिकता पर आज रिया को गर्व हो रहा था।

कुछ महीनों के बाद रिया ने सारी परीक्षाएँ पास की। उसकी पोस्टिंग भी स्पाउज़ ग्राउंड पर उसी शहर में हो गयी। जब अपने साथ दे तो हर मुश्किल को पार करना आसान हो जाता है। विमलाजी गर्व से फूली नहीं समा रही थी। हर जगह कहती रहती थी, "सब के बेटे नाम रौशन करते हैं, मेरी बहू ने मेरा मान बढ़ाया है।" अब लोग मुझे रिया की सास के रूप में जानेंगे। अब उसके नाम से हमारी पहचान होगी। एक माँ-बाप को अपने बच्चे से और क्या चाहिए? धन्य हैं उसके माता-पिता जिन्होंने ऐसे हीरे को जन्म दिया। इतने अच्छे संस्कार दिये जो आज एक नहीं बल्कि दो-दो घरों की पहचान बन गई है।

आस्था गुप्ता
लेखाकार

कार्यालय में आयोजित वार्षिक खेलकूद - 2020-21 की झलकियाँ।

घर की याद

अकेला कमरा और बेजान सा शहर,
घर से दूर रहने वालों का शायद यही है मुकद्दर।
रिज्क की तालाश घर से दूर ले आती है,
कम साधनों में जीना सिखाती है,
और फिर बे-घरी का ताना दे जाती है।
घर की याद बहुत आती है,
परायों की भीड़ में अपनों को खोजना,
निराश थके हारे घर को लौटना,
तरक्की की आस हमें बढ़ाती है।
घर की याद बहुत आती है।
खाने में हजार नखरे करने वाले,
आज खुद से अधपका खाना बनाते हैं,
जिम्मेदारियों का बोझ सबसे दूर कर जाती है।
घर की याद बहुत आती है।

मो. इमरान
एम.टी.एस.

शहादत

"चिट्ठी ना कोई संदेश, जाने वो कौन-सा देश, जहाँ तुम चले गए। हजारों कसमें-वादे करके, मुझे इस दुनिया में अकेले छोड़कर तुम कहाँ चले गए? क्या वे सारे कसमें-वादे झूठे थे?" माँ से कहकर, "चिंता मत करना, जल्दी घर लौटकर आऊँगा , इस दिवाली घर को दिये से रौशन करूंगा।" "हमें हमेशा के लिए अंधेरे में छोड़ गए। जब हमारा बच्चा अपने पापा के बारे में पूछेगा तो मैं उसे क्या जवाब दूँगी? क्या तुम्हें सिर्फ अपने देश से प्रेम था, मुझसे नहीं?" इन सभी बातों के अलावे और भी न जाने कितने प्रश्न गौरी के हृदय को झकझोर रहे थे। गौरी के जीवन में तो जैसे दु:खों का पहाड़ गिर पड़ा हो, रो-रोकर उसकी आँखें सूज चुकी थी। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे?

यह कहानी एक जमींदार की लड़की गौरी और एक गरीब किसान का लड़का विजय की है। विजय बचपन से ही काफी होनहार और मेहनती था। वह प्रत्येक कक्षा में अव्वल आता था, इसलिए उसके पिता उससे कृषि-कार्य न करवा कर उसे पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देने को कहते थे ताकि आगे चलकर वह सरकारी नौकरी पा सके जिससे उन्हें गरीबी और भुखमरी जैसी समस्याएँ न झेलनी पड़ें। दसवीं की बोर्ड परीक्षा में वह गाँव में सर्वाधिक अंक लाकर प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ। उस गाँव के मुखिया ने उसे सम्मानित भी किया। वह दिन उसके लिए किसी उत्सव से कम नहीं था। घर के सभी लोग प्रसन्न थे। लेकिन आगे की पढ़ाई के लिए उसके समक्ष आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हो गई। अतः उसके पिता ने घर और जमीन गिरवी रखकर विजय का नामांकन कॉलेज में करवा दिया।

कॉलेज में उसकी मुलाक़ात गौरी से हुई जो पढ़ने मी बहुत अच्छी थी और दिखने में भी काफी खूबसूरत थी। दोनों में दोस्ती हो चुकी थी और धीरे-धीरे यह दोस्ती प्रेम में बदल गई। इंटरमीडिएट की परीक्षा में दोनों प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। इससे उनके घरवाले बहुत प्रसन्न होते हैं। उस समय किसी गरीब किसान के लड़के के लिए इंटरमीडिएट की

पढ़ाई करना बहुत बड़ी बात थी। इस प्रकार वह गाँव के अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बन गया था।

गौरी अपने पिता को विजय के बारे में बताती है परंतु उसके पिता इस रिश्ते से इंकार कर देते हैं तथा उसकी शादी किसी दूसरे लड़के के साथ कर देते हैं। शादी वाले दिन गौरी भागकर विजय के पास चली जाती है और मंदिर जाकर दोनों शादी कर लेते हैं। दोनों एक-दूसरे के साथ बहुत खुश थे। सब ठीक-ठाक चल रहा था। कुछ समय के बाद विजय का चयन सैन्य विभाग में हो जाता है और वह ट्रेनिंग के लिए चला जाता है। यह जुदाई उनके लिए बहुत कष्टदायी था परंतु उनके पास और कोई विकल्प न था। वह कुछ दिनों बाद गौरी को फोन करता है। वह कहती है "हमारा पहला करवा चौथ आनेवाला है, उस दिन आप आएंगे न!" विजय कहता है "हाँ मैं कोशिश करूंगा और तुम्हारे लिए साड़ी-चुनरी भी लाऊँगा। तब गौरी कहती है- "साड़ी-चुनरी नहीं चाहिए मुझको, तू आँखों की प्यास बुझा जा प्यारे, ना चाह मुझे किसी चीज की, बस तू सही सलामत आ जा प्यारे!" पहली करवा चौथ पर वह छुट्टी लेकर घर आता है। सभी लोग बहुत प्रसन्न होते हैं। परंतु जब उसके जाने का समय आता है, सबकी आँखें नम हो जाती हैं। गौरी उसके गले से लिपटकर खूब रोटी है, वह उसे जाने से रोकती है, किन्तु विजय चला जाता है। वह कहता है कि वज जल्द ही वापस आएगा।

कुछ महीनों के बाद गौरी एक बहुत ही प्यारे बेटे को जन्म देती है और उसका नाम दीपक रखती है।

उसे प्यार से लोग दीपू बुलाते थे। काफी समय से विजय घर नहीं आया था, वह अपने बच्चे को भी अभी तक देखा नहीं था। जब उसका फोन आता है, तो वह पूछती है, "आप कब आएंगे?" जवाब आता है कि अभी इधर हाइ अलर्ट है, अभी नहीं आ सकता। वह कहता है कि स्थिति सामान्य होने पर दिवाली में घर आ सकता हूँ। वह दिलासा दिलाता है "इस बार सब मिलकर घर को दिये से सजाएँगें, दीपू के लिए ढेर-सारे खिलौने भी लाऊँगा। इस बार दिवाली धूम-धाम से मनाएँगे।" परंतु नियति को यह मंजूर न था। विरोधी सेना से युद्ध के दौरान एक बम विस्फोट में वह शहीद हो गया। यह खबर सुनकर गौरी की तो जैसे पाँव तले जमीन खिसक गई। मानों दुखों का पहाड़ गिर पड़ा हो। उसे कुछ

समझ नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे। वह अंदर से पूरी तारा से टूट चुकी थी। उसके सास-ससुर की हालत और भी खराब हो जाती है। उन्हें बहुत बड़ा सदमा लग जाता है और वे काफी लाचार तथा बीमार हो जाते हैं। अब पूरे परिवार की ज़िम्मेदारी गौरी के कंधों पर आ जाती है। कुछ समय बाद घर की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो गई कि खाने-पीने को लाले पड़ गए। एक तो छोटा बच्चा, ऊपर से दवाई व इलाज के खर्चे,वह बिल्कुल असहाय महसूस कर रही थी। ये निम्न पंक्तियाँ उसकी यथा को प्रकट करती हैं:-

"हे ईश्वर मेरी जिंदगी का, ये तूने कैसा उपयोग किया,

एक तो आर्थिक तंगी, ऊपर से ये प्रियतम वियोग दिया"

गाँव के आस-पास के लोग उसकी मदद के लिए आगे आते हैं। इस दुख की घड़ी में गौरी के माता-पिता उसके साथ खड़े होते हैं। सरकार की ओर से मुआवजे की घोषणा किए जाने पर वह कहती है, "मुझे मुआवजा नहीं चाहिए, अगर देना ही है तो मुझे मेरा पति वापस दे दो" उसकी यह कथन लोगों के दिल को छू गई और उनकी आँखें भी नम कर गई।

उसने प्रण किया "जिस प्रकार मेरे पति देश के लिए शहीद हो गए, ठीक उसी प्रकार मैं भी देश के लिए शहीद हो जाऊँगी। जब मेरे प्रियतम ही नहीं रहे तो मेरा जीवन भी व्यर्थ है। अगर उनकी नजरों में देशप्रेम ही सच्चा प्रेम है तो मैं भी इसे अनुभव करना चाहती हूँ।" अतः उसने सेना में भर्ती होने का प्रण लिया। इसके लिए उसने काफी मेहनत की और आखिरकार उसका चयन सैन्य विभाग में हो गया। और इस तरह उसने अपना शेष जीवन देश के नाम समर्पित कर दिया। दस वर्षों की सेवा के बाद देश की रक्षा करते हुए उसकी मौत हो गई। इन दोनों की शहादत दुनिया को एक अनोखी प्रेम कहानी दे गई।

अलिषा मौर्या

एम.टी.एस.

माँ की ममता

माँ का लारा माँ का दुलारा
माँ की अँखियों का तारा
हर चीज से न्यारा माँ का प्यार
माँ है तो जगत है माँ है तो प्यार
माँ के पैरों में स्वर्ग की छाँव
माँ की आँचल में ममता की अमृत
माँ की पुकार से अमृत छलके
माँ की पुकार से ममता चमके।
माँ जब हमें लोरी सुनाती
नन्हें आँखों में प्यार भरी नींद आती
धूप जब आती है माँ की सुरीली आवाज
हमें उठाती है।
माँ का लारा माँ का दुलारा
बच्चे हैं माँ की अँखियों के तारे
जब नन्हें पाँव नहीं चल पातें
माँ की अंगूली के ही सहारे
अपने नन्हें कदम बढ़ा पाते
जीवन की प्रथम पाठशाला
माँ की ममता ही सहारा
बुरा -भला बताती है
सच के पथ पर चलना सिखाती है

माँ की ममता है जीवन का आधार
माँ ही करती सच्चा प्यार
माँ की ममता है हर त्योहार
उसकी लोरी में है मिठास
उसकी गोद में ही जीवन का आधार
उसकी ममता से छलकता प्यार।

पंकज कुमार गुप्ता
डी.ई.ओ.

लॉकडाउन

सांवला रंग, हट्टेकट्टे चेहरे वाला माहिम महतो आँगन में बैठकर अपना मोबाइल देख रहा था। उसकी उम्र 42-43 साल होगी। बाप बनने के बाद दो महीने की छुट्टी लेकर वह अपने घर गौरीपुर आया हुआ है। राधा की माँ बनने के समय छुट्टी नहीं मिली थी माहिम को। मुंबई में एक बड़े कोंट्रेक्टर के अधीन मकान बनाने का काम करता है माहिम। वह सालभर काम करता है, उसकी शादी को तीन साल हुए हैं। तब से घर संसार में ज्यादा ध्यान लगा रहता है। राधा माहिम के लिए एक अच्छी गृहिणी है। घर, आँगन, सास-ससुर सबकी अच्छी तरह से देखभाल करती है। खुद मकान बनाने का काम करके भी माहिम पैसे के अभाव के कारण अपना घर ठीक से नहीं बना पाया है। जमीन, छत किसी भी चीज़ की ढलाई नहीं कर पाया, पर उस छोटे से घर को ही अच्छे तरह से सजाकर रखा था राधा ने।

"बहू चावल निकालकर धो डालो, देर हो रही है, माहिम को दोपहर के खाने में देर हो जाएगी।", राधा की सास चिल्लाई। राधा अपनी बच्ची को दूध पिला रही थी। उसने जवाब दिया, "जी माँ, आई"। घर में एक बड़े से डिब्बे में चावल रखा हुआ है। वह डिब्बा घर के लोगों के लिए सन्दूक की तरह है। जब तक वह रहेगा, घर में सदा लक्ष्मी देवी विराज करेंगी। उसी से चावल निकाल कर बाहर आई राधा और माहिम को बोली, "बेटी के पास जाकर बैठो, मच्छरदानी लगी हुई है, तब भी उसे मच्छर काट लेगा, थोड़ा ध्यान रखना।"

आज बंगला नववर्ष है, घर मे पूजा-पाठ हुई है। रसोई घर से पकवान की सुगंध आने लगी। बेटे के आने से माँ को भी अच्छा खाना बनाने में मन लगने लगा। बेटी को देखने माहिम कमरे के अंदर गया, बेटी गहरी नींद में है। वह मोबाइल से एक के बाद फोटो खींचने लगा, फिर देखने लगा बेटी किसकी तरह दिखने में लगती है- राधा, माहिम, दादा या दादी जैसी?

बाहर से रतन की आवाज आई, "क्या कर रहे हो माहिम? सिर्फ बेटी को देखकर ही समय बीता रहे हो?" रतन माहिम का दोस्त है, रतन फिर बोला, "फिर बाहर भी कैसे जाओगे? चाय की दुकान में भी बैठोगे तो रुमाल बांधना पड़ेगा, नहीं तो पुलिस की लाठी खानी पड़ेगी, यह कैसी बीमारी है दोस्त, सिर्फ छूने से फैल जाती है? बिना मुखौटा पहने बाहर निकलना भी मुश्किल है। भगवान ये क्या ज़माना आ गया है!" माहिम ने कहा, "हाँ, सच में रतन भाई, लौटने के कुछ दिनों में ही लॉकडाउन शुरू हो गया, लेकिन मुझे भी तो काम पर वापस जाने का समय हो गया, कैसे जाऊँ?"। रतन चला गया, माहिम गहरी सोच में डूब गया।

गाँव में इस समय चरक का मेला होता है, पर लॉकडाउन के कारण सब कुछ बंद है। आदमी का आदमी से मिलना-जुलना बंद है। इस भीषण महामारी की एकमात्र दवा है – आपस में दूरी। आज रात को

माहिम की तीन महीने की बच्ची सो नहीं पा रही थी। राधा भी रसोई में व्यस्त थी। महामारी, लॉकडाउन, काम पर वापस जाने आदि के लिए माहिम आज परेशान है। पर कहाँ है राधा?

थोड़ी देर बाद राधा आई, बेटी को गोद में लेकर दूध पिलाने लगी। माहिम ने कहा, "कल एक बार पासपोर्ट ऑफिस जाऊंगा, मालिक का प्रोजेक्ट आबूधाबी में चालू होने जा रहा है। पासपोर्ट बनने से वहाँ जाऊंगा, वहाँ दिहाड़ी ज्यादा है"। राधा ने स्वाभाविक ढंग से पूछा, "कितने दिन बाद घर आओगे?" माहिम बोला, "छुट्टी की बात तो कही नहीं जा सकती, प्रोजेक्ट खत्म होने के बाद ही शायद आ पाऊँगा। लेकिन पैसों की भी बहुत जरूरत है। इस मकान को पक्का बनाऊँगा, घर में पलंग, अलमारी रहेगा और एक सफ़ेद मार्बल का डाइनिंग टेबल जिसका मुझे बहुत शौक है।" "लेकिन हम सब को तो जमीन पर बैठ कर खाने में ही मज़ा आता है" - राधा बोली। इतने में माहिम के मोबाइल से एक आवाज़ आई, राधा माहिम के पास जाकर बैठी, "दिखाओ ना क्या देख रहे हो" राधा ने देखा कि हजारों मजदूर की चिल्लाहट जो अन्य प्रदेशों में मजदूरी को गए थे। बस अड्डों, रेलवे प्लेटफार्मों आदि में सिर्फ इन्सानो के सिर दिख रहे थे। कहीं रास्तों में किसी के गोद में बच्चा रो रहा है। भूखे, प्यासे माँ-बच्चों के आँसू एक साथ बह रहे थे। घर वापस आने के लिए श्रमिकों का हाहाकार। राधा रो पड़ी, "तुम कहीं नहीं जाओगे, कहीं नहीं!" "लेकिन मेरा सपना? पक्का मकान? मार्बल का टेबल?" मोबाइल पर सिर्फ आवाज़ हुई, राधा फिर झुक गयी मोबाइल देखने के लिए, प्रधानमंत्री का चेहरा दिखाई दिया, दूसरी लॉकडाउन की घोषणा होने जा रही थी अनिश्चित समय के लिए, माहिम के मुंह पर चिंता की रेखाएँ, कैसे काम पर वापस जाएगा? परिवार कैसे चलेगा? एक तरफ हजारों मनुष्यों की भीड़, दूसरी तरफ कामकाज खोने की चिंता। सारे सपने टूटने का दर्द।

राधा माहिम के करीब आई। आँखें मिलाकर बोलने लगी, "शायद भगवान की यही मर्ज़ी है कि तुम सदा के लिए मेरे पास रहो। मुन्नी भी अपने माँ-बाप के गोद मे पले बढ़े। बूढ़े माँ बाप के जीवन का सहारा बनो। यह तुम्हारा वास्तविक घर है। आबूधाबी बोलो या मुंबई वो तो विदेश है। दिरहम न मिले सही छुट्टा पैसे इकट्ठा करके हम रुपया बनाएँगे, हम दोनों की कोशिश जरूर हमारे सपने पूरी करेंगी।"

मोबाइल स्क्रीन पर कोई एक न्यूज चैनल पर दिखाया गया कि भीड़ हटाने के लिए लाठीचार्ज हो रही है पुलिस के द्वारा उन श्रमिकों की दुर्दशा देखते हुए माहिम भी स्वयं को उनमें शामिल पा रहा था। माहिम ने राधा के कंधे पर सर रखा और विदेश जाने का ख्याल त्याग दिया।

तापसी आचार्य बसाक
सहायक लेखा अधिकारी

टिफिन बॉक्स

स्कूल में जब लंच आवर की घंटी बजती है तब बच्चे रंग बिरंगे अलग अलग आकार के टिफिन बॉक्स अपने स्कूल बैग से निकाल लेते हैं। उस बॉक्स में माँ, दीदी, दादी आदि के हाथों से प्यार से बने पकवान रहते हैं। बच्चे इस ब्रेक का बेसब्री से इंतजार करते हैं। हर बॉक्स में अलग-अलग व्यंजन होते हैं जो बच्चों की भूख छू-मंतर कर देते हैं। स्कूल ही वह पहला स्थान है जहां हमारे जीवन में टिफिन बॉक्स का प्रवेश होता है। होमवर्क भले ही छूट जाए लेकिन टिफिन बॉक्स शायद ही छूटता है। एकाध-बार छूट भी जाए तो घबराए माता –पिता लंच आवर तक बड़े प्यार से टिफिन बॉक्स स्कूल पहुँचा जाते हैं। टिफिन बॉक्स से जुड़ी एक रोचक घटना से रुबरु होते है।

एक मोहल्ले में अँग्रेजी माध्यम का एक नया स्कूल खुला था। कुछ ही महीने में वह स्कूल जम गया अर्थात उस स्कूल में बहुत सारे नामांकन हो गए थे। उस मोहल्ले का यह सबसे पहला अँग्रेजी माध्यम का स्कूल था। जब स्कूल है तो लंच आवर भी होना तय था। लंच आवर है तब अलग अलग तरह के टिफिन बॉक्स का भी होना अनिवार्य ही था। नए स्कूल में सभी नए बच्चे। जिनमें अभी ठीक से दोस्ती भी नहीं हुई थी। उस स्कूल के क्लास 2 के बच्चे उस दिन अपना-अपना टिफिन खाएं। कई का तो टिफिन बॉक्स लंच आवर के बाद पहुँचा। कुछ दिनों तक यही घटना चलती रही। धीरे-धीरे उस क्लास के बच्चों में दोस्ती होने लगी। क्लास 2 के बच्चे मुश्किल से 6 वर्ष से 8 वर्ष के बीच होंगे। मनुष्य सामाजिक प्राणी होते हैं इन बच्चों ने यह साबित कर दिया। लंच आवर में ये लोग एक दूसरे का टिफिन मिल बाँट कर खाने लगें। टिफिन बॉक्स एकता की मिसाल भी साबित होता है, इस युक्ति को भी इन लोगों ने चरितार्थ कर दिया था। जो दोस्ती नई थी थोड़ी कच्ची थी अब वह पक्की हो चली थी। जब टिफिन बॉक्स साझा होने लगा फिर क्या था कभी किताब कभी पेंसिल सब साझा होने होने लगे थे।

चूंकि मोहल्ला ग्रामीण क्षेत्र का था इसलिए टिफिन बॉक्स में घर के बने अनाजों के ही भोजन रहा करते थे। और यह घटना भी लगभग 25 वर्ष पहले की है। उस ग्रामीण क्षेत्र में उस समय मैगी, चाउमीन, सैंडविच आदि खाद्य पदार्थ चलन में नहीं आयें थे। इस कारण से भी उस क्लास के बच्चे इन फास्ट फूड से वंचित रहे थे। टिफिन से पहले का जो पीरियड था वह इन बच्चों को बहुत लंबा लगता था। बच्चे इस पीरियड में शक्ति विहीन महसूस करने लगते थे। पेट में चूहे यूं कूदते थे मानो वे पेट फाड़कर निकल जाएंगे। जैसे ही लंच पीरियड की घंटी बजती थी बच्चों में एक अजीब सी स्फूर्ति कौंध उठती थी। उस अनुभूति के कारण लंच पीरियड में बच्चे बड़े जोश से प्रार्थना करते थे। उसके बाद दौड़ कर हाथ धोने के लिए बेसिन की तरफ बढ़ते थे। उसके बाद सभी अपना टिफिन बॉक्स लेकर स्कूल असेंबली की तरफ जाते थे। उस स्कूल में मिल बाँट कर खाने की शुरुआत इन्हीं बच्चों ने की थी। असेंबली में क्लास 2 के पाँच बच्चों का यह समूह गोलाकार में बैठ गया और अपने रंग-बिरंगे टिफिन जब खोलते हैं तब किसी में रोटी-सब्जी थी, तो किसी में पराठा सब्जी। पाँच टिफिन जब मिलते हैं तो खाने का विकल्प बढ़ जाता है। ठीक इसी प्रकार ये बच्चे भी रोज भोजन में भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यंजन का लुत्फ उठाते थे। गोलाकार आकार में बैठे इन बच्चों की बातों को थोड़ा सुनते हैं :

अभिजीत कहता है "आशीष तुम्हारे टिफिन से आज अच्छी खुशबू आ रही है, आंटी ने क्या दिया है ?"

आशीष जवाब देता है "पूड़ी और गोभी आलू की सब्जी।"

मोहित कहता है " अरे वाह! आज भी आलू गोभी, आंटी की यह सब्जी काफी टेस्टी होती है।''

इस तरह से इन बच्चों की बात चलती रहती थी और वे सभी कभी उस टिफिन में हाथ डालकर कभी दूसरे टिफिन में हाथ डालकर लंच का आनंद लेते थे। हर रोज इस तरह की बातचीत के साथ बच्चे अपना भोजन ग्रहण करते थे। इस लंच ग्रुप को देखकर स्कूल के सीनियर क्लास के बच्चे भी इसी तरह से लंच करना चालू कर दिये थे। इस बात से क्लास 2 के ये बच्चे अनभिज्ञ थे। कभी-

कभी किसी टिफिन बॉक्स में नजर पड़ने पर कुछ बच्चे हँसते भी थे। एक ग्रुप में पाँच बहनें थी जो साथ-साथ खाना खाती थी। स्कूल में नटखट बच्चों की कमी नहीं होती हैं। ये पाँचों बहनें किसी दिन रोटियाँ और अचार खा रही थी। तभी कुछ सीनियर क्लास के नटखट बच्चे रोटी आचार कहकर शोर मचाने लगे थे। और इस तरह से पूरे स्कूल में यह बात फैल गई थी।

कभी-कभी किसी बच्चे को लंच करने का मन नहीं होता था, लेकिन कई टिफिन बॉक्स में मौजूद व्यंजन उसके मन को बदल देते थे। टिफिन बॉक्स एक प्यार का डब्बा है। बनाने वाले के हाथ भले ही बदल जाए लेकिन प्यार का जायका कम नहीं होता है। घर से दूर होने के बाद भी टिफिन बॉक्स उन बच्चों का ठीक ढंग से भरण पोषण कर रहा था। क्लास 2 के बच्चे ऐसे ही अपना स्कूली जीवन जी रहे थे जिसमें टिफिन बॉक्स का एक अलग ही स्थान था।

मोहित एक दिन घर से रुठ कर बिना खाए और बिना टिफिन बॉक्स लिए स्कूल आ गया था। लंच टाइम में, सभी के टिफिन बॉक्स खुले लेकिन मोहित के नहीं। दोस्तों को पूछने पर उसने बताया कि उसे आज मम्मी ने डांट लगाई थी। इसलिए उसने खाना भी नहीं खाया ओर न ही टिफिन बॉक्स लाया। सभी दोस्त उसका हाथ पकड़ कर नीचे बैठा देते हैं और अपने अपने टिफिन बॉक्स दिखाकर कहते हैं "यह रहा टिफिन बॉक्स।" मोहित रोज लंच किया करता था लेकिन उस दिन की बात अलग थी। दोस्तों ने मोहित को अपने हाथों से लंच करवाया था। इस तरह से लंच पीरियड खत्म हो गई। लेकिन टिफिन बॉक्स पीछा कहाँ छोड़ने वाला था। लंच की बाद वाली पीरियड चल रही थी। तभी स्कूल के हैडमास्टर क्लास 2 में आयें और मोहित को अपने चैंबर में ले गए। वहाँ मोहित देखता है कि हैडमास्टर के टेबल पर एक स्टील वाला तीन मंज़िला टिफिन बॉक्स पड़ा हुआ था। कुछ देर बाद पता चला कि यह मोहित का ही टिफिन बॉक्स था जो उसकी दादीजी ने पहुंचाया था। मोहित तो खा चुका था। अब तीन मंज़िला टिफिन बॉक्स देखकर उसका पेट और भर गया था। हैडमास्टर के कहने पर वह टिफिन बॉक्स अपने क्लास में ले गया। वहाँ सभी बच्चे तीन मंज़िला टिफिन बॉक्स देखकर दंग भी थे और हंस भी रहे थे। मोहित के सभी दोस्त जिज्ञासा भरी निगाहों से टिफिन बॉक्स को घूरे जा रहे थे। आखिरकार घंटी बजी और स्पोर्ट्स पीरियड शुरू हो गई थी। मोहित बड़ी मुश्किल से उस टिफिन बॉक्स को उठा पा रहा था। सभी दोस्त उसकी मदद करने लगे। टिफिन

बॉक्स के अंदर क्या है? सब के मन में यही सवाल था। स्पोर्ट्स पीरियड में बच्चों को खेलने का मौका मिल जाता था। लेकिन क्लास 2 के इस ग्रुप के बच्चे आज खेल के बदले टिफिन करने वाले थे। सभी तीन मंज़िला टिफिन पर टकटकी लगाए हुए थे। किसी ने कहा "मोहित चलो इसे अब खोला जाए।" इंतजार खत्म हुआ और टिफिन बॉक्स को खोला गया। सबसे ऊपर वाली बॉक्स में गरमागरम चावल था। दूसरे बॉक्स में दाल थी। अब तीसरे बॉक्स की बारी आई, उसमे आलू गोबी की सब्जी थी और उसी बॉक्स के साइड में कुछ आलू के पकोड़ें थे। सभी दोस्त दंग थे। पहली बार टिफिन बॉक्स में चावल जो देखा था। सभी दोस्त मिलकर टिफिन बॉक्स में रखे व्यंजन चट कर गए। इस घटना के बाद से इस ग्रुप में चावल वाली टिफिन बॉक्स का भी चलन हो गया था।

टिफिन बॉक्स से जुड़ी ऐसी कई घटनाएँ हैं जो रोचकता के साथ-साथ इसके महत्व को भी उजागर करती हैं। स्कूली जीवन से शुरू होकर कॉलेज और फिर कार्यालय तक टिफिन बॉक्स कदम से कदम मिलाकर साथ देती हैं। टिफिन बॉक्स तैयार करने वालों के हाथ भले ही बदलते रहते हैं लेकिन टिफिन बॉक्स के अंदर व्याप्त प्यार, भावनाएँ, खुशबू और स्वाद में कोई फर्क नहीं पड़ता है। टिफिन बॉक्स एक ऐसा डब्बा है जो रिश्तों में प्यार का पिटारा भी धारण करता है। इसे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग कहना गलत नहीं होगा।

सन्नी कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

चुनावी-पर्व

देश में त्योहारों की कमी तो है नहीं- "बारह माह में तेरह पर्व" यहाँ की पुरानी कहावत है। त्योहार भी ऐसे कि मजाल है कि कोई भी आयोजन आठ पहर में खत्म हो जाए। आगमन से लेकर विदाई तक की शृंखला खत्म होते-होते आगामी त्योहार के ढ़ोल बजने लगते हैं। लेकिन हमारे आनंदित होने के लिए इतना सब नाकाफी होता है। अगर साल के एकाध माह को छोड़ दिया जाए तो बाकी के महीनों में लग्नों की लगन लगी ही रहती है। वैसे तो शादी-विवाह दो परिवारों के बीच का आंतरिक मामला या उत्सव है, लेकिन जब-तक पूरा मोहल्ला उठकर भांगड़ा न कर ले, ब्याह का आनंद फीका ही रहता है। इस सामूहिक अनूष्ठान में समय लगना तो लाज़मी है। 'चट मंगनी पट ब्याह' का रट लगाने वाले इस देश में न तो मंगनी चट से होती है और न ही ब्याह पट से। देखा-देखी से लेकर छेका-छेकी तक और दान-दहेज से लेकर ऐलान-ए-जंग [शुभ-विवाह] के लिए तारीख फ़ाइनल होने तक बैठकों के कई दौर चलते हैं। बीच-बीच में मामा-फूफा और चाचाओं के मान-मनौवल का सिलसिला अलग से। कुछ भी हो लेकिन सबका अपना अलग ही आनंद होता है। सब तय-तमाम होने के बाद रस्मों-रिवाजों का एक के बाद एक ऐसा तिलिस्म चलता है कि ब्याह तक तो जोड़े एक बार यह सोच ही लेते हैं कि लोग रस्मों का आनंद उठा रहे हैं या हमारी बेबसी के मजे ले रहे हैं।

धार्मिक-सांस्कृतिक और पारिवारिक उत्सवों से थोड़ा सा विराम मिला नहीं कि चुनावी डंका गरज उठता है। बाकी सब पर्वों की तुलना में इस अनूठे पर्व की महिमा रत्ती भर भी कम नहीं है। चुनाव को पर्व कहें अथवा समर यह टीवी डिबेट का मुद्दा है, पर सौभाग्य से इस पर बहस नहीं होती वरना इसके निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए भी चुनाव आयोग को अलग से चुनाव कराने पड़ते। खैर असल मुद्दे पर आते हैं। साल में औसतन एक बार तो चुनावी-पर्व का बिगुल बज ही जाता है। इस

बिगुल के शोर के आगे दूसरे पर्वों के नगाड़े मद्धिम पड़ जाते है। यह पर्व ऐसा है कि इससे कोई भी अछूता नहीं रह पाता है। आदमी तो इस चुनावी रंग में सना होता ही है, गाय-बैल और हल-हथौड़ा से लेकर फूल-पत्ते और जल-जंगल सब के सब शरीक हो जाते हैं बेगानी शादी में, अब्दुल्ला दीवाना की तरह। शायद यही कारण है कि चुनाव को लोकतन्त्र का महापर्व भी कहा जाता है।

लोगों को चुनावों से चाहे लाख ही शिकवा-शिकायत और गिला-नफरत क्यों न हो, इसके मधुरस से सिक्त और तृप्त होने की लालसा से कोई भी बच नहीं पाता है। इसके अलग-अलग रंगों में डूबते-उतराते लोग नुक्कड़ की चाय दुकान पर जब बड़े दार्शनिक अंदाज़ में फलाने दल, ढिकाने रंग और चिलाने नेता के जीत-हार और उससे होने वाले वैश्विक नफा-नुकसान (ग्लोबलाइज़ेशन का प्रभाव) पर अपने विचार-वाणी बघारते हैं, तो समझ आता है कि नशा सिर्फ राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा वर्जित मादक पदार्थों में ही नहीं होता, बल्कि कुछ नशा तो आदमी के मन-मिजाज और विचार में भी होता है, जिसकी उल्टी ठीक चुनावों से पहले होने लगती है। वैसे चुनावी-प्रचार के दौरान चाहे जितनी कर्कशता, कड़वाहट और कट्टरता वाली भाषणबाजी, बयानबाजी और जुबानी-जंग क्यों न हो जाए, चुनाव समाजवाद और सहजीवता का सबसे बेहतर उदाहरण है। आदमी चाहे जिस धर्म-संस्कृति-भाषा को मानने वाले हो, वह किसी भी दल-नेता और रंग का समर्थक हो, चुनावी वैतरणी में उतरकर सभी एकाकार हो जाते हैं। उनकी अपनी भाषा, बोली और भंगिमा में दूसरे से तनिक भी अंतर नहीं दिखता। मंच पर सवार होते ही चुनावी आदमी अपने चेहरे से मुखौटा उतार देता है। फिर चाहे गांधी, पटेल, रवीन्द्रनाथ अथवा विवेकानंद के उद्धरणों या विचारों को ही क्यों न आलाप रहा हो, उसके लहजे में वह भदेसपन आ ही जाता है, जो आजकल की हिन्दी वेबसीरीजों के पकवानों का सबसे सस्ता और चहेता अचार है।

बात जब अचार पर हो रही हो तो आचार और आचार-संहिता का ध्यान बरबस आ ही जाता है। बाकी त्योहारों में और चुनावी-पर्व में यहीं जाकर फासला बड़ा हो जाता है। बाकी त्योहारों में रस्मों-रिवाजों के भीतर आनंद के घूंट छिपे रहते हैं, जबकि चुनावी-पर्व में आनंद के राह का रोड़ा यही आचार संहिता या रिवाज होता है। बाकी पर्वों में रिवाजों का पालन लोगों की जिम्मेवारी होती है और समस्त क्रियाकलाप का केन्द्रबिन्दु यही रिवाज ही होते हैं, जबकि चुनाव में तो आचार-

संहिता अर्थात चुनावी रिवाज को कौन कितना जोरदार चांटा मारता है, यह बड़ी खबर होती है। जब हजारों की भीड़ हाथों में झण्डा-कम-डंडा लिए बमुश्किलन दस फीट चौड़ी सड़क की छाती पर मैदान फतह करने के लिए कूच करती है, तो बेचारा सड़क भी इस बात पर आँसू बहाता है कि अभी जुम्मा-जुम्मा आठ दिन ही तो हुए थे कि पीडबल्यूडी वालों ने चुनावी-हड़बड़ी में सड़क की इस फूटी किस्मत पर पतली सी परत चढ़ाई थी। तुम्हारे इस कूच से हमारा जो कचूमर निकल रहा है, उसकी कसक अगले चुनाव तक याद रहेगी।

सड़क के कचूमर तक तो आचार और आचरण को स्वीकार भी कर लिया जा सकता है, क्योंकि अपने जनप्रतिनिधि तो सड़क, बिजली, पानी आदि को अपनी बपौती मानते ही हैं, लेकिन असल गाज़ तो तब गिरती है, जब अपने फरेबी-वादों और विरोधी-भर्त्सना के लिए गली के मोड़ पर चटकदार मंच बनता है। मंच भले ही छोटा हो, लेकिन उसका शोर शहर के छोर तक न पहुंचे तो भाषण की महिमा ही क्या। इस कारण डाल से लेकर पात तक हर ओर भोंपुओं का जाल बिछ जाता है। शहर का छोर तो तब भी ठीक है, लेकिन मंच पर चल रहे भाषण के बीच जब अगल-बगल के घरों के भीतर लोग अपनी ही आवाज सुनने के लिए मशक्कत करने लगते हैं, तब स्थिति गंभीर हो जाती है। जो लोग अपने घरों में बच्चों को लगभग फूल वॉल्यूम में संगीत सुनने पर उनके गालों पर चमाट रसीद देते हैं, वो मंच से नारे लगाते वक़्त अपनी सारी की सारी कैलोरी खर्च कर देने में गर्व की अनुभूति करते हैं। उनकी कानफोड़ू आवाज सुनकर जीवन में अपनी सुनने की क्षमता पर मलाल होता है। लेकिन भरोसा कीजिए उस बोल रहे महानुभाव पर जरा भी रोष नहीं आता, क्योंकि मेरा विधान-प्रेमी मन जानता है कि यह महानुभाव अपने गले को कष्ट हम जैसे जनता के लिए ही दे रहे हैं। यह अलग मुद्दा है कि जिस दिन मेरे भीतर का रोष बाहर आ गया, उस दिन के बाद से मुझे अपने कान के साथ रोष पर भी मलाल होगा। खैर मरता क्या न करता। करने को कुछ होता भी नहीं है। विडम्बना का मारा आदमी चिग्घाड़ते शोर के बीच वोटर कार्ड में छपे अपनी ही तस्वीर को पहचानने की व्यर्थ कोशिश में लग जाता है।

चुनावी-उत्सव के माहौल में रंगीन पोस्टरों, बैनरों और पताकाओं को देखकर ऐसा लगता है कि देश अब श्वेत-श्याम दौर से बाहर आ गया है। चारो तरफ बड़ी हंडियों में पक रहे पुलाव के गंध में लोग इतने मदहोश हो जाते हैं कि उन्हें भान ही नहीं रहता कि अभी-अभी नेताजी की गाड़ी जिस वादे को न्योत कर गई, उसकी खिचड़ी उन्होने पाँच साल पहले आंच पर चढ़ाई थी, लेकिन हांडी अभी भी ठंडी है, हमारे जीवन और उसके सपनों की तरह। अगर कुछ गर्म हे तो, वह चुनावी माहौल और ख्याली पुलाव हे।

कुन्दन कुमार रविदास,

कनिष्ठ अनुवादक

जो हो रहा हो जाने दो

जो हो रहा उसे हो जाने दो
भविष्य में जीने से अच्छा है कुछ खोने दो।
ज़िंदगी चंद दिनों का फलसफा है
आने वाले कल की सोचकर,
अपने वर्तमान को मत डुबोने दो।
ये मुश्किलें, नाराजगी ये दुश्वारियाँ,
तो आती जाती रहेंगी,
जो सामने है उसे देखकर
कुछ सपने तो संजों लेने दो।
माना कि तेरे पास कुछ नहीं,
पर इसका ये मतलब तो नहीं
कि जिंदगी जीने का कुछ मकसद ही न हो।
जिंदगी को नित नई एक पैगाम तो लाने दो,
गर गिरती है कुछ आसूएँ तो गिर जाने दो।
ये दुख दर्द तो जीवन की मजबूतियाँ हैं,
अभी तो बहुत कुछ सीखना है इस जिंदगी से,
थोड़ी आँसू थोड़ी हँसी को,
मुस्कुरा कर तो पी लेने दो।
सच-झूठ को न परख ए जिंदगी
कुछ रिश्तें अपने उसूलों पर भी जी लेने दो
जो हो रहा उसे हो जाने दो
भविष्य में जीने से अच्छा है कुछ खोने दो।

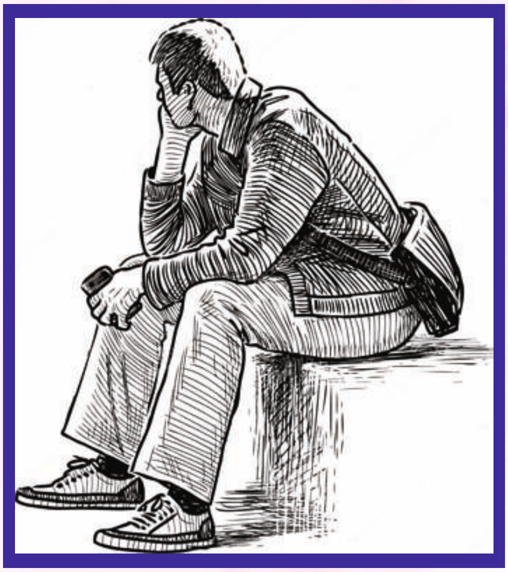

संजय कुमार
डी.ई.ओ.

पोस्टमास्टर

पोस्टमास्टर की पहली तैनाती उलापुर गांव में हुई थी। गांव बहुत छोटा था। गांव के पास ही एक नील की फैक्ट्री थी जिसका मालिक एक अँग्रेज़ था। वह वहाँ एक डाकघर खुलवाने में सफल रहा था।

हमारे पोस्टमास्टर कलकत्ता के रहने वाले थे। पानी से निकालकर सूखे में डाल देने से मछली की जो दशा होती है वही दशा इस सुदूर गाँव में आकर इसकी हुई थी। उसका कार्यालय तथा बैठक कक्ष में अंधेरा था जिसकी छत घास-फूस से बनी हुई थी, पास ही काई से लबालब एक तालाब था जिसके चारों ओर घने जंगल थे।

नील की फैक्ट्री में काम करने वाले कर्मचारियों को फुर्सत नहीं रहती थी, इसके अतिरिक्त वे सभ्य लोगों के साथी बनने योग्य भी नहीं थे। न ही कोई कलकत्ता का लड़का साथी बनाने की कला में निपुण है। अजनबियों के बीच या तो वह गर्व महसूस करता है या व्यग्र हो जाता है। खैर, पोस्टमास्टर के साथी थे लेकिन बहुत कम, उसके पास ज्यादा काम करने को भी न था।

कभी-कभी वे एकाध कविता लिखने की कोशिश करते थे। पत्तियों तथा आकाश में मौजूद बादल की गतिविधियाँ जीवन में उमंग भरने के लिए पर्याप्त हैं- ऐसे भावनाओं को वह अभिव्यक्त करने की कोशिश करता था। लेकिन भगवान ही जानते हैं कि उस बेचारे इंसान को एक नयी ज़िंदगी उपहार स्वरूप प्राप्त होती यदि अरेबियन नाइट्स के कुछ जिन्न एक ही रात में सारे पेड़ तथा पत्ते को साफ कर पक्के सड़क तथा गगन चुम्बी इमारतें जिसमें छिपे हुए बादल के दृश्य दिखाई देते, में बदल देते।

पोस्टमास्टर की तनख्वाह कम थी। वह अपना भोजन स्वयं पकाता और रतन को भी खाने को देता जो उसी गाँव की एक अनाथ लड़की थी। रतन उसके छोटे-मोटे काम कर दिया करती थी।

शाम को जब गांव की गोशाला से कुंडलाकार धुआं उठने लगा, झाड़ियों में झींगुर बोलने लगे, दूर के गांव में बाउलों का दल अपने दैनिक बैठक के दौरान ढोल-करताल बजाकर ऊंचे स्वर में गीत छेड़ देता, जब कोई कवि जो घने बाँसों की पत्तियों की गति देखने की कोशिश किया होगा तब वह काफी डर गया होगा, पोस्टमास्टर ने अपने छोटे से दीपक को रोशन किया और " रतन " को बुलाया।

रतन पोस्टमास्टर के बुलाने के इंतजार में बाहर बैठी रहती थी, और जवाब देती थी, "क्या आपने मुझे बुलाया था, महोदय?”

"तुम क्या कर रही हो?" पोस्टमास्टर ने पूछा।

"मैं रसोई में चूल्हा जलाने जा रही हूँ।" रतन ने जवाब दिया।

और पोस्टमास्टर कहते हैं: "ओह, रसोई का चूल्हा कुछ समय के लिए रहने दो; मुझे चिलम जलाकर दो।”

अंत में रतन गाल फूलाकर आई और तंबाकू को जलाने के लिए एक जलते कोयले की लौ में जोर से फूँक मारने लगी। इससे पोस्टमास्टर को बातचीत करने का अवसर मिल गया। "ठीक है, रतन ," वह शुरू हुआ, "क्या तुम्हें अपनी माँ के बारे में कुछ याद है?" यह बातचीत के लिए अच्छा विषय था। रतन को आंशिक रूप से याद था, और आंशिक रूप से नहीं। वह अपनी माँ से अधिक अपने पिता को प्रिय थी; अपनी माँ की तुलना में उसे अपने पिता ज़्यादा स्पष्ट रूप से याद थे। वह अपने काम के बाद शाम को घर आते थे। जैसे ही रतन को काफी बातें याद आने लगी तब वह पोस्टमास्टर के पैरों के पास फर्श पर बैठ गई। उसे एक छोटे भाई की याद आई - और कैसे वह अतीत में कुछ बादलों से भरे हुए दिन में अपने भाई के साथ तालाब के किनारे एक छड़ी को बंसी मानकर मछली पकड़ने का खेल खेला करती थी। इस तरह की छोटी घटनाएं उसकी स्मृति की बड़ी घटनाओं पर हावी हो जाती थी। इस प्रकार, ऐसी बातें करते हुए उन्हें अक्सर बहुत देर हो जाया करती थी और पोस्टमास्टर खाना पकाने के लिए बहुत आलस महसूस करते थे। रतन तब जल्दबाजी में आग जलाकर और कुछ रोटियाँ बना लेती थी, जो सुबह की ठंडी सब्ज़ी के साथ, उनके खाने के लिए पर्याप्त थी।

कभी शाम को बड़े खाली कमरे के कोने में अपनी मेज पर बैठकर, पोस्टमास्टर भी अपने घर, अपनी मां और बहन को याद करता अपने घर से दूर रहने के कारण उसका दिल दुखी था। कुछ यादें हमेशा उसे सताती थीं, लेकिन इसके बारे में वह फैक्ट्री के पुरुषों के साथ बात नहीं कर सकता था, हालांकि वह ऐसी बातें साधारण छोटी लड़की के समक्ष कर लेता था। इसलिए रतन उन लोगों को माँ, भाई, और बहन के रूप में समझने लगी, जैसे कि वह उन्हें शुरू से जानती थी। वास्तव में, वह उन सभी की पूरी तस्वीर अपने दिल में चित्रित कर चुकी थी।

एक दोपहर बारिश हो रही थी, जब बारिश रुकी तो ठंडी हवा बह रही थी; भीगी धूप में नम घास और पत्तियों की गंध ऐसी महसूस हुई जैसे किसी के शरीर पर धरती की गर्माहट महसूस हो रही हो। एक दोपहर, प्रकृति के दर्शकों के कक्ष में अपनी शिकायत के बोझ को दोहराते हुए एक पक्षी निरंतर चहक रही थी।

पोस्टमास्टर के पास करने के लिए कुछ नहीं था। ताज़े धूले हुए पत्तों का टिमटिमाना और चलने वाले वर्षा-बादल देखने लायक थे; पोस्टमास्टर उन्हें देख रहा था और अपने आप में सोच रहा था: "ओह, अगर कुछ दयालु आत्मा पास होती - सिर्फ एक प्यार करने वाला इंसान जो मेरे दिल के करीब होता!" वह सोचने लगा कि वह पक्षी क्या कहने की कोशिश कर रहा था और वह पत्तियाँ बड़बड़ा कर क्या कहना चाह रही हैं। परंतु यह कोई नहीं जानता था और न विश्वास करेगा कि मध्य-दिवस के अंतराल में एक कम वेतन पाने वाले गाँव के पोस्टमास्टर के दिमाग में ऐसे ख्याल आ सकते हैं।

पोस्टमास्टर ने आह भरी, और पुकारा “रतन।" उस समय रतन अमरूद-पेड़ के नीचे घूम रही थी। वह कच्चे अमरूद खाने में व्यस्त थी। अपने मालिक की आवाज सुनकर, वह भागकर आई और हाँफती हुई बोली, "दादा, क्या मुझे बुला रहे थे?" "मैं सोच रहा था," पोस्टमास्टर ने कहा, "तुम्हें पढ़ना सीखा दूँ।" और फिर दोपहर के विश्राम करने के दौरान उन्होंने उसे वर्णमाला सिखाई।

इस प्रकार, बहुत कम समय में रतन को पढ़ाई दोहरे व्यंजन के रूप में मिल गया था। ऐसा लग रहा था मानो सीजन की बौछारें कभी खत्म नहीं होंगी। नहरें, तालाबें खोखले पानी के साथ बह गए

थे। दिन-रात बारिश की गुनगुनाहट सुनाई देती थी, और मेंढकों की भीड़। गाँव की सड़कें अगम्य हो गई थीं।

एक भारी बादल वाली सुबह, पोस्टमास्टर की छोटी पुतली लंबे समय से उसके कॉल के लिए दरवाजे के बाहर इंतजार कर रही थी लेकिन, हमेशा की तरह यह नहीं सुनते हुए, उसने अपनी कुत्ते की कान वाली किताब उठाई, और धीरे से कमरे में प्रवेश किया। उसके गुरु अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे, और यह सोचकर कि वह आराम रहे हैं। जब वह वापस जा रही थी तब अचानक सुना “रतन !" उसने एक बार मुड़कर पूछा: “क्या आप सो रहे थे, दादा?" पोस्टमास्टर ने कहा: “मैं ठीक नहीं हूँ। मेरे सिर को महसूस करो, क्या यह बहुत गर्म है?"

अपने निर्वासन के अकेलेपन में, और बारिश की उदासी में, उनके बीमार शरीर को थोड़ा निविदा नर्सिंग की आवश्यकता थी। उन्होंने कोमलता से कोमल हाथों के माथे पर स्पर्श को याद करने की लालसा की। रतन छोटी लड़की बनकर रह गई। उसने एक बार माँ के पद पर कदम रखा, जिसे गाँव के डॉक्टर ने बुलाया, उसने मरीज को उचित अंतराल पर अपनी गोलियाँ दीं, रात भर अपने तकिये के सहारे बैठी रही, उसके लिए अपनी रोटियां पकाई, और हर बार पूछा: "क्या तुम्हें अच्छा लग रहा है, दादा?”

पोस्टमास्टर के कुछ समय पहले कमजोर शरीर के साथ, अपने बीमार-बिस्तर को छोड़ने में सक्षम था। "इससे अधिक नहीं," उन्होंने निर्णय के साथ कहा। "मुझे यहाँ से स्थानांतरण प्राप्त करना होगा।" उन्होंने एक बार कलकत्ता में खराब वातावरण के आधार पर स्थानांतरण के लिए एक आवेदन लिखा था।

नर्स के रूप में अपने कर्तव्यों से मुक्त होकर, रतन ने फिर से दरवाजे के बाहर अपनी पुरानी जगह बना ली। लेकिन उसने अब वही पुरानी पुकार नहीं सुनी। वह कभी कभी चोरी से कमरे के अंदर झाँकती और पोस्टमास्टर को कुर्सी पर बैठे या अपने बिस्तर पर लेटे, और हवा को महसूस करते पाती। जबकि रतन को उसके कॉल का इंतजार था तथा पोस्टमास्टर को उसके आवेदन के जवाब का इंतजार था। लड़की ने अपने पुराने पाठों को बार-बार पढ़ा। आखिरकार, एक हफ्ते के बाद, एक शाम कॉल आया। - "क्या तुम मुझे, दादा बुला रहे थे?"

पोस्टमास्टर ने कहा: "मैं दुखी होकर जा रहा हूँ, रतन।"

"कहाँ जा रहे हो, दादा?"

"मैं घर जा रहा हूँ।"

"तुम वापस कब आओगे?"

"मैं वापस नहीं आ रहा हूँ।"

रतन ने कोई और सवाल नहीं पूछा। पोस्टमास्टर, अपने स्वयं के समझौते के आधार पर, उसे यह बताने के लिए गए कि स्थानांतरण के लिए उसका आवेदन अस्वीकार कर दिया गया था, इसलिए उसने इस्तीफ़ा दे दिया था और घर जा रहा था।

लंबे समय तक दोनों में से किसी ने भी कुछ नहीं बोला। दीपक धीरे-धीरे जलता चला गया, और छत के एक कोने से पानी का रिसाव होने लगा और पानी फर्श पर रखे एक मिट्टी के बर्तन में तेजी से टपकने लगा।

थोड़ी देर बाद रतन उठी और खाना बनाने के लिए रसोई में चली गई; लेकिन वह अन्य दिनों के विपरीत आज देर से गई थी। सोचने के लिए कई नई चीजें उसके छोटे मस्तिष्क में प्रवेश कर गई थीं। जब पोस्टमास्टर ने अपनी रात खत्म कर ली, तो लड़की ने अचानक उससे पूछा: "दादा, क्या आप मुझे अपने घर ले जाएंगे?"

पोस्टमास्टर हंस पड़ा। "क्या विचार है। " उन्होंने कहा; लेकिन उसने उस लड़की को समझाना ज़रूरी नहीं समझा, जिसमें बेहूदगी थी।

पूरी रात, उसके जागने और उसके सपनों में, पोस्टमास्टर के हँसते हुए जवाब ने उसे सताया - "क्या विचार है!"

सुबह उठने पर, पोस्टमास्टर ने स्नान करने हेतु पानी तैयार पाया। लड़की उससे जाने के समय के बारे में नहीं पूछ सकती थी, इसलिए उसने सूर्योदय से बहुत पहले ही नदी से पानी ला दिया था, ताकि वह जल्द से जल्द तैयार हो जाए क्योंकि वह यह चाहती है। स्नान के बाद रतन को पुकारा

गया। उसने नीरवता से प्रवेश किया, और आदेश के लिए चुपचाप अपने मालिक के चेहरे की ओर देखा। गुरु ने कहा: "तुम्हें मेरे चले जाने के बारे में चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है, रतन ; मैं अपने उत्तराधिकारी से कहूंगा कि तुम पर नजर रखे।" ये शब्द दयालु थे, इसमें कोई शक नहीं लेकिन तरीका अलग था।

रतन बिना किसी शिकायत के उसके गुरु से कई एक डांट वहन किया था, लेकिन इस तरह के शब्द सहन नहीं कर सकती है। वह फूट-फूट कर रोने लगी, और कहा: "नहीं, नहीं, आपको मेरे बारे में किसी को कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं है; मैं यहां नहीं रहना चाहती।"

उसने रतन को पहले कभी इस तरह नहीं देखा था।

विधिवत रूप से नए प्रभारी का आगमन हुआ और पोस्टमास्टर ने उन्हें पदभार देने के लिए प्रस्थान करने की तैयारी कर ली। शुरू करने से ठीक पहले उन्होंने रतन को बुलाया और कहा: "यहाँ तुम्हारे लिए कुछ है; मुझे आशा है कि यह तुम्हें कुछ समय के लिए मदद करेगा।" उन्होंने अपनी यात्रा के खर्च के लिए केवल एक तिकड़ी बरकरार रखते हुए अपनी जेब से पूरे महीने का वेतन निकाला। तब रतन उसके चरणों में गिर गई और रोते हुए कहती है: "ओह, दादा, मैं आपसे प्रार्थना करती हूं, मुझे कुछ मत दीजिए, किसी भी तरह से मेरे बारे में परेशानी न करें," और फिर वह बाहर चली जाती है।

पोस्टमास्टर ने एक आह भरते हुए अपनी कालीन की थैली उठाई, अपने छाते को कंधे पर रख लिया, और अपनी काई रंग के टिन की डिक्की ले गया, वह धीरे-धीरे नाव की ओर बढ़ा।

जब वह अंदर गया तब नाव चलने लगी थी, और बारिश से सूजी हुई नदी, जैसे कि पृथ्वी से आंसू बह रही है, उसके धनुष पर झूलती और डूब जाती है, तब उसे दिल में एक दर्द होता है ; एक गाँव की लड़की का खेदपूर्ण चेहरा उसके प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रेरित कर रहा था। एक समय उन्हें वापस जाने का मन किया, अपने साथ उस अकेली लड़की को भी छोड़ दिया, जो दुनिया से दूर हो गई थी। लेकिन हवा ने केवल पाल को भर दिया था, नाव अशांत धारा के बीच में अच्छी तरह से मिल गई थी, और पहले ही गांव पीछे रह गया था।

इसलिए, यात्री जो तेजी से बहने वाली नदी में पैदा हुआ था, दुनिया में होने वाली अनगिनत बैठकों और विभाजन पर दार्शनिक प्रतिबिंबों के साथ खुद को सांत्वना दिया - मृत्यु पर, महान विदाई, जिसमें से कोई भी नहीं लौटा।

लेकिन रतन के पास कोई दर्शन नहीं था। उसके दिल के किसी कोने में एक उम्मीद की किरण थी कि उसके दादा वापस आ जाएंगे। इसकी शौकीन गलतियां अनगिनत हैं। इस बीच पक्के सबूतों पर अविश्वास किया जाता है। झूठी उम्मीद सभी के साथ और मुख्य के साथ जुड़ी हुई है, एक दिन एक बार फिर जागरण के दुख-दर्द प्रकट होते हैं और उसके बाद आता है गलतियों की भूलभुलैया में वापस आने की तरस।

प्रभास चंद्र दास

वरिष्ठ लेखाकार

मजबूर किसान

लिखता मैं किसान के लिए,
मैं लिखता इंसान के लिए
नहीं लिखता धनवान के लिए,
नहीं लिखता भगवान के लिए
लिखता खेत खलिहान के लिए,
लिखता मैं किसान के लिए
नहीं लिखता उद्योगों के लिए,
नहीं लिखता ऊँचे मकान के लिए
लिखता हूँ सड़कों के लिए,
लिखता मैं इंसान के लिए
कलम मेरी बदलाव नहीं लाई,
न हीं उम्मीद इसकी मुझे |

अजय कुमार
डी.ई.ओ.

अस्तित्व के लिए खतरा - प्लास्टिक

प्लास्टिक का निर्माण सन् 1907 के लगभग हुआ था। जबसे इसके उपयोगों को सब जानने लगे यह धीरे-धीरे हमारे जीवन का अहम हिस्सा बनता चला गया और हम इस पर आश्रित होते चले गए। स्थिति ऐसी हो गई है कि प्लास्टिक के बिना आम लोगों की सुखद जीवन, कल्पना मात्र लगने लगी है। कुछ शताब्दी में ऐसा हुआ कि पृथ्वी पर शायद ही ऐसी कोई जगह हो जहाँ प्लास्टिक की उपस्थिति न हो। इससे कई तरह के फायदें है तो कई तरह के नुकसान भी हैं। जिंदगी में आराम की स्थिति प्लास्टिक के कारण आई है। सभी लोग अमीर या गरीब इसका इस्तेमाल दैनिक जीवन में रोजाना एक न एक बार जरूर करते हैं। इसके खतरे और नुकसान को जानते हुए भी लोग इसके इस्तेमाल को बंद नहीं कर पा रहे हैं।

दूध के बोतल, बैग, पानी की बोतलें, बर्तन, पेन, बाल्टी, छतरी, जूतें-चप्पल, बरसाती कपड़े, मोबाइल, नेपकिन, ग्लास, ब्रश, कंघी, घड़ी और न जाने कितने अनगिनत प्लास्टिक के सामान हम इस्तेमाल करने लगे हैं। इसके इस्तेमाल का मुख्य कारण हे प्लास्टिक का सस्ता, टिकाऊ, ठोस, गंधहीन और जल से न गलना। भारत में आजादी के बाद प्लास्टिक का इस्तेमाल बहुत तेजी से बढ़ा। धीरे-धीरे आम जिंदगी में यह इस तरह घुलता-मिलता गया हे कि यह आजकल के दैनिक जीवन में सबसे ज्यादा इस्तेमाल की जाने वाली वस्तु बन गयी हे। प्लास्टिक उत्पादों में सबसे अधिक उपयोग प्लास्टिक के कैरी बैग, पैकिंग, फोम वाले कप-प्याले, कटोरे व प्लेट, गुब्बारे, पेय पदार्थों के लिए छोटे प्लास्टिक पैकेट और सड़क किनारे लगाए जाने वाले बैनर जैसे प्लास्टिक उत्पाद शामिल हैं।

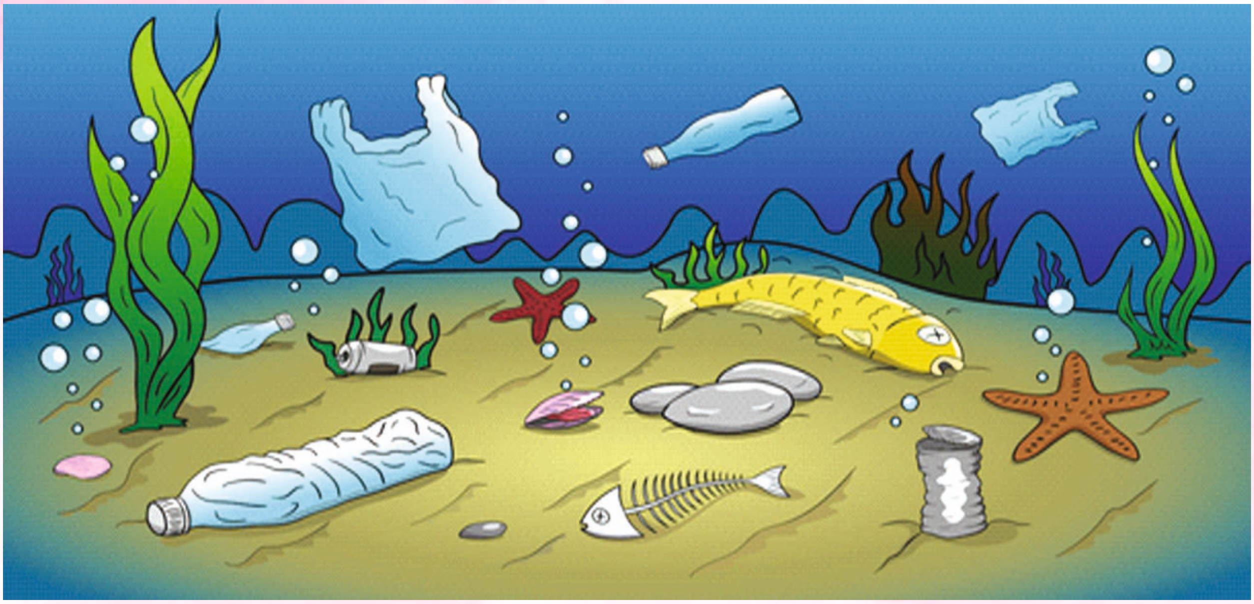

वैज्ञानिकों के अनुसार प्लास्टिक को सड़ने में लगभग पाँच सौ वर्ष लग जाते हैं। सहजता से उपलब्धता के कारण इसका इस्तेमाल इसके जहरीलेपन को अनदेखा करके किया जाता है। प्लास्टिक का रिसाइक्लिंग मात्र 20 प्रतिशत भाग ही हो पाता है बाकि का 80 प्रतिशत भाग समुद्र में चला जाता है। समुद्र में पाए जाने वाले जीव-जन्तु जाने अनजाने प्लास्टिक प्रदुषण के शिकार हो रहे है। प्रति वर्ष एक लाख से अधिक समुद्री जीव-जन्तु प्लास्टिक के कारण मारे जाते हैं जिसमें शील, ह्वेल, समुद्री कछुए, पक्षी इत्यादी शामिल है। इसके असर से कई जीव-जन्तु हमेशा के लिए विलुप्त होते जा रहे हैं। इसके अलावे समुद्र, नदियों और झीलों का जल कई तरह के प्रदूषणों से ग्रस्त हो गया है। कस्बों और गाँवों के कुओं, तलाबों एवं नहरों का जल भी प्लास्टिक के कारण प्रदूषित हो गया है। जिससे इन कुओं, तलाबों एवं नहरों के जल का उपयोग करने वाले के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। प्लास्टिक की बढ़ती माँग और इस्तेमाल कई बिमारियों का कारण बन गई है।

हमारे शरीर में प्लास्टिक कैसे भोजन के द्वारा जा रहा है इसे जानना बहुत जरूरी है। हमलोग अपने भोजन में जो नमक खाते हैं वह समुद्र से प्राप्त होता है। समुद्र में घुलकर प्लास्टिक नमक के जरिए रोजाना अपने शरीर में डाल रहे हैं। ऐसे ही मछली के जरिए प्लास्टिक को अपने शरीर में पहुँचा रहे हैं। समुद्री मछलियाँ प्लास्टिक को खाती हैं जिससे उसके शरीर के हर हिस्से में प्लास्टिक घुल जाता है।

प्लास्टिक का सबसे ज्यादा इस्तेमाल पैकेजिंग के लिए किया जाता है। पैकेजिंग उद्योग दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग बन गया है। इस उद्योग के लिए हर साल आठ करोड़ टन प्लास्टिक तैयार होता है। हम सोच सकते हैं कि कितनी बड़ी तादात में प्लास्टिक का कचरा समुद्र और जमीन में दबाया जा रहा है। प्लास्टिक जो कुछ वर्ष पहले मानव का मित्र बना हुआ था। वही आज मानव सभ्यता का दुश्मन बनता जा रहा है। इससे कई तरह के भयानक बिमारियाँ और विकृतियाँ उत्पन्न होते जा रही है। औद्योगिक और घरेलू क्षेत्रों में प्लास्टिक का उपयोग इतना बढ़ गया है कि इसके बिना कोई कार्य संभव नहीं दिखाई पड़ता है। यूज-एंड-थ्रो की संस्कृति के कारण प्लास्टिक देश-विदेश की समस्या व संकट बनती जा रही है। प्लास्टिक को अपघटित होने में कई हजार वर्ष लगते हैं जिससे यह हवा, पानी और मिट्टी को प्रदूषित करता है। प्लास्टिक को जलाने से कई तरह की जहरीली गैसें पैदा होती है, जिनमें नाइट्रिक ऑक्साइड, कार्बन डाईऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड प्रमुख हैं। इन जहरीली गैसों से फेफड़ों और आँख की बिमारियाँ, कैंसर, मोटापा, मधुमेह, थायरॉयड, कब्ज, पेट दर्द, सिर दर्द जैसी अनेक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। नए शोध के अनुसार प्लास्टिक से बने बर्तन में गर्म पेयों और खाद्यों के उपयोग से इसमें मौजूद नुकसानदेह कैमिकल डाइऑक्सिन लेड (सीसा), कैडमियम आदि खाद्य पदार्थों में घुलकर हमारे शरीर में पहुँच जाते हैं जिससे फेफड़ें, पेट, सिर और आँख से संबंधित समस्याएँ पैदा होती है। जीव-जन्तु के अतिरिक्त वनस्पतियों, औषधियों और पेड़ों पर भी इसका असर पड़ता है। प्लास्टिक में पाए जाने वाले सिंथेटिक पॉलिमर नामक पदार्थ है जो पर्यावरण के लिए बेहद हानिकारक होता है।

प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्ति पाने की दिशा में दुनिया भर में अनेक शोध और कार्य किए जा रहे हैं। इस दिशा में कुछ सफलता भी मिली है। लेकिन शत-प्रतिशत सफलता के लिए अभी काफी कुछ किया जाना है। नदियों और समुद्र तटों पर अरबों टन प्लास्टिक कचरा मौजूद है। इस कचरें का रिसाइकिलिंग करने का कार्य भी दुनिया की कुछ कंपनियाँ कर रही है। जूते बनाने वाली कंपनी एडिडास ने 2018 में प्लास्टिक कचरे से पचास लाख जोड़ी जूते तैयार किए। इसमें जो प्लास्टिक उपयोग किया गया वह पोस्ट-कंज्यूमर रिसाइकिल्ड (पी.सी.आर.) प्लास्टिक था, जो महासागरीय तटों और तटीय क्षेत्रों से इकट्ठा किया गया।

एक आँकड़े के अनुसार विश्व स्तर पर प्रत्येक मिनट दस लाख प्लास्टिक की बोतलें खरीदी जाती है। भारत की पवित्र कही जाने वाली गंगा नदी में प्लास्टिक प्रदूषण का असर सबसे ज्यादा है। भारत सरकार के 2016 के आँकड़ों के अनुसार प्रतिदिन 15 हजार टन प्लास्टिक अपशिष्ट निकलता है और लगातार इसमें बढ़ोतरी हो रही है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि देश में पर्यावरण को नष्ट करने में प्लास्टिक का कचरा कितना जिम्मेदार है। प्लास्टिक के कारण पर्यावरण में उत्पन्न प्रदूषण की स्थिति को देखते हुए केंद्र सरकार ने एक विशेष तरह का कानून 'प्लास्टिक मैन्युफेक्चर सेल एण्ड यूसेज रूल्स' 1999 में बनाया है। इस कानून में अनिवार्य किया गया कि 8 गुना 12 इंच से कम आकार वाले प्लास्टिक बैग बेचे जा सकते है। इस कानून को और अधिक कारगर ढंग से प्रभावी बनाने के लिए इस कानून में संशोधन करते हुए 'रिसाइकिल्ड प्लास्टिक मैन्युफैक्चर एण्ड यूसेज रूल्स 2003' बनाया गया। संशोधन के बाद भी इस कानून का प्रभाव देखा नहीं गया। बाजार में प्लास्टिक के बैग और थैलियाँ पहले जैसे बिकते रहे फिर 2011 में 40 माइक्रोन वाले कम मोटाई वाले कैरी बैग का प्रावधान लाया गया। इसके बाद कुछ खास तरह के कानून प्लास्टिक सामानों के उत्पाद और कचरे को लेकर 2016 में नया कानून बनाया गया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पर्यावरण दिवस पर घोषणा की कि सिंगल-यूज प्लास्टिक को चरणबद्ध तरीके से 2022 तक चलन से बाहर किया जाएगा। राष्ट्रीय एवं संगठनात्मक स्तर पर 2025 तक प्लास्टिक से होने वाले प्रदुषण को कम कर देने का लक्ष्य रखा गया है। केंद्र सरकार और राज्य सरकारों ने सिंगल-यूज प्लास्टिक को राज्य स्तरीय नियम बनाकर प्रतिबंधित करने का कार्य किया है। भारत के अतिरिक्त अमरीका, चीन, बांग्लादेश, आस्ट्रेलिया, कोस्टारिका, फ्रांस, अफ्रीका, न्यूगिनी, रूस और अन्य अनेक देशों में सिंगल-यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया जा चूका है।

विश्व की अनेक चुनौतियों में कचरा प्रबंधन एक बड़ी चुनौती के रूप में हमारे सामने है। ऐसा नहीं है कि दुनिया में कचरे से हो रहे प्रदूषण के प्रति कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है, लेकिन भारत सहित दक्षिण एशिया के देशों में प्लास्टिक और दूसरे तरह के कचरों से बढ़ रहे प्रदूषण के प्रति लोगों में आमतौर पर कोई जागरूकता देखने को नहीं मिलती। भारत के महानगरों में जिसमें

दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और चेन्नई शामिल हैं, प्लास्टिक के कचरे से दिनों दिन पर्यावरण प्रदूषण की समस्याएँ बढ़ रही है। ऐसे में हर व्यक्ति का फर्ज बनता है कि वे प्लास्टिक सहित दूसरे तरह के कचरों को कम करने में अपना सहयोग दें।

कूड़ा नॉन-डिग्रेडेबल प्लास्टिक, बायो-डिग्रेडेबल प्लास्टिक, काँच-शीशा, बेकार कागज, जैव-खाद्य अपशिष्ट को अलग-अलग करके अलग-अलग थैलों में रखने और निर्धारित डिब्बों या स्थानों पर डालने की आदत डालनी चाहिए। जैव कूड़े को खाद बनाने का प्रयास करना चाहिए या जो बना रहे हों उन्हें मदद करनी चाहिए। कागज, काँच, शीशा और लकड़ी को अलग-अलग करके विभिन्न रिसाइक्लिंग केंद्रों पर पहुँचाने की आदत डालनी चाहिए। सूती, जूट, सुतली, सन और इसी तरह के दूसरे थैलों को बढ़ावा देकर हम अपना योगदान दे सकते हैं। इन उपायों से जहाँ पर्यावरण को बेहतर बनाने में हम अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, वहीं पर अपरिग्रह के स्वदेशी मंत्र को जीवन में ढालने के प्रति आगे बढ़ सकते हैं।

जितेन्द्र शर्मा

सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

रवींद्र संगीत

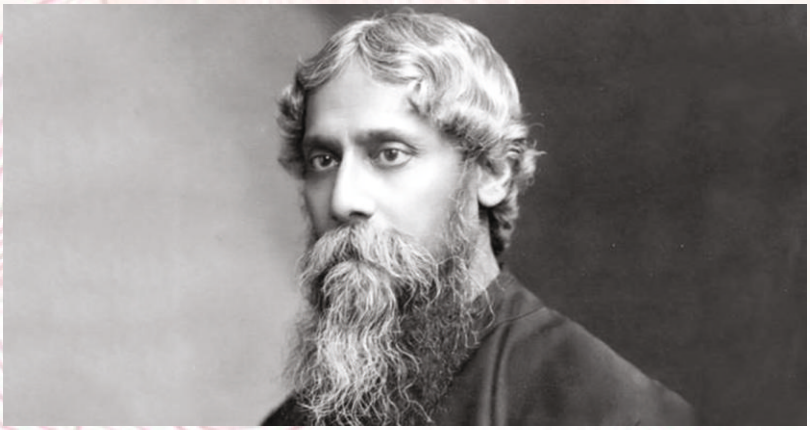

बंगाल कला, साहित्य और संगीत के क्षेत्र में सदैव समृद्ध रहा है। यहाँ के रचनाकारों ने उत्कृष्ट साहित्य एवं कालजयी संगीत का सृजन किया है। बंगाल की संगीत परंपरा को जिसने विशिष्ट पहचान दिलाई तथा गीतिकाव्य धारा को उच्चतर आसन पर प्रतिष्ठित किया, वह विधा है रवींद्र संगीत। रवींद्र संगीत अर्थात रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित एक विशिष्ट शैली का संगीत।

रवींद्रनाथ टैगोर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्हें आदर के साथ 'गुरुदेव' भी कहा जाता है। गुरुदेव को कला के लगभग सभी विधाओं में महारत हासिल थी। यद्यपि उन्होंने गद्य और पद्य दोनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, तथापि हम मानते हैं कि पद्य साहित्य के संवर्धन में उनकी भूमिका अतुलनीय है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता के अलावा बहुमूल्य गीत लिखे। उन्हें सुमधुर संगीत से अलंकृत किया। उनके द्वारा सृजित संगीत में शास्त्रीयता है, पारंपरिक बाउल लोकधुन है तथा कहीं-कहीं पश्चिमी सिंफनी की प्रतिध्वनि भी मिलती है।

कहते हैं कि संगीत मानवीय संवेदना का सबसे सरल संवाहक है। जीवन के विविध भाव यथा प्रेम, विरह, आनंद, उल्लास, हर्ष, वेदना आदि की सहज अभिव्यक्ति का माध्यम संगीत ही बनता है। रवींद्र संगीत जीवन के समस्त आयामों को स्पर्श करता है। टैगोर के लिखे गीतों में सभी मनोभाव की गहरी पड़ताल है। माननीय भावना, प्रेम तथा करुणा का इतना ऊंचा स्तर शायद ही अन्यत्र देखने को मिलता है। इन गीतों में प्राकृतिक सौंदर्य का विशद वर्णन है। विशेषकर वर्षा ऋतु और वसंत ऋतु पर लिखे उनके गीत में प्रकृति के सौंदर्य अनुभूति के प्रति एक नई दृष्टि मिलती है। रवींद्र संगीत की यह विशेषता है कि इसके द्वारा आध्यात्मिकता, रहस्यवाद जैसे गूढ़ विषय को भी अत्यंत सरल एवं सहज रूप से अभिव्यक्त किया गया है।

बंगाल की संस्कृति पर रवींद्र संगीत का गहरा प्रभाव है। टैगोर ने 2,000 से अधिक गीत रचे। इन गीतों के जरिए प्रकृति के प्रति उनका गहरा लगाव एवं मनुष्य के अंतर्मन के प्रति उनकी संवेदना प्रकट होती है। इन गीतों के माध्यम से उनके दर्शन की समझ विकसित होती है। गुरुदेव ईश्वर, प्रकृति और प्रेम को एक इकाई मानकर उन्हें एकीकृत करते हैं। प्रेम मानवीय भौतिक सुखों का पर्याय न होकर निस्वार्थ समर्पण एवं करुणा का प्रतीक बनकर उभरता है।

आमारो परान जाहा चाए

तुमि ताई, तुमि ताई गो

तोमा छाड़ा आर ए जगोते

मोर केह नाई किछु नाई गो

अर्थात मेरा प्राण(आत्मा) जिसे चाहता है वह केवलमात्र तुम ही हो, तुम्हारे सिवा मेरा कोई नहीं है, मेरा कुछ भी नहीं है। उनका एक अन्य प्रसिद्ध गीत है-

जोदि तोर डाक शुने केउ ना आशे

तबे एकला चलो रे

यानी यदि तुम्हारे बुलावे पर कोई तुम्हारा साथ न दे तो अकेले ही मंजिल की ओर बढ़ो। सर्वविदित है कि टैगोर ने हमारे देश के राष्ट्रगान की रचना की है। इस राष्ट्रगान को गाकर हम सभी भारतीय गर्व का अनुभव करते हैं और देश प्रेम की भावना से भर जाते हैं। उनके अन्य कई गीतों में भी राष्ट्रप्रेम की चेतना के स्वर सुनाई देते हैं।

ओ आमार देशेर माटी

तोमार परे ठेकाई माथा

भाव यह है कि ऐ मेरे देश की मिट्टी मैं तुम पर अपना माथा टेकता हूँ। टैगोर की रहस्यवादी चिंतनधारा उनके गीतों से फूटती है।

दाँड़िए आछो तुमि आमार गानेर ओ पारे

आमार सुरगुली पाए चरण, आमी पाईने तोमारे

तुम मेरे गीतों से परे कहीं खड़े हो, मेरे गीतों के सुर तुम्हारे चरणों तक पहुँचते हैं, लेकिन मैं तुम तक नहीं पहुँच पाता।

टैगोर के गीतों में प्रयुक्त बिंब, प्रतीक, भाव एवं शैली ने हिंदी के छायावादी कवियों को भी प्रभावित किया है। उनके गीतों को 'गीत-बितान' नामक पुस्तक में संग्रहित किया गया है। टैगोर कम उम्र में ही कविताएँ लिखने लगे थे। अपनी रचनाशीलता के प्रथम चरण में टैगोर ने 'भानुसिंह' के छद्म नाम से पदावली की रचना की थी। यह 'भानुसिंह पदावली' के नाम से प्रसिद्ध है। वैष्णव भक्ति परंपरा में पदावली का विशेष महत्व होता है। टैगोर ने कृष्ण और राधा के प्रेम को ब्रजबुलि भाषा में सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।

टैगोर के नृत्य नाटकों में भी कई गीत पिरोए गए हैं। नृत्य नाटक की कथावस्तु तथा उसमें समाहित किए गीतों की प्रासंगिकता मिलकर श्रोता और दर्शकों को अलौकिक सम्मोहन पाश में बांधते हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से रवींद्र संगीत हमारे देश की धरोहर है। बंगाल की उत्सवधर्मिता तथा सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना ने इस संगीत विधा को जन- जन तक पहुँचा दिया है। वास्तव में रवींद्र संगीत हर युग की वाणी है। बंगाल में रवींद्र संगीत के बिना किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम की कल्पना नहीं की जा सकती है। ऐसा नहीं है कि यह संगीत विधा केवल उच्च वर्ग के शिक्षित जनों तक ही सीमित है, यह संगीत सभी वर्गों के लोगों में समान भाव से लोकप्रिय है।

रवींद्रनाथ टैगोर से पूर्व बांग्ला साहित्य में संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रचलन अधिक था। कठिन एवं दुरूह शब्दों के प्रयोग के कारण साधारण जन साहित्य से अछूते थे। रवि ठाकुर का अवतरण साहित्य जगत में एक क्रांतिकारी घटना थी। टैगोर ने संस्कृत के सरल प्रचलित शब्दों के साथ-साथ आम बांग्ला शब्दों का प्रयोग किया। इसके कारण उनके छंद अधिक गेयात्मक और लचीले बने। रवींद्र संगीत प्रेम, सहृदयता, समर्पण, करुणा जैसे मानवीय गुणों का पोषण करता है। उनके गीतों में एक ठहराव है, एक सुकून है। यह हमें घने वटवृक्ष की छाया-सी शांति देता है। इनके शब्द हृदय के अन्तरतल को सहलाते हैं। यह जीवन के कठिन रास्तों पर चलने की प्रेरणा देता है तथा दुख-संताप में संबल प्रदान करता है।

बिपदे मोर रक्खा करो ए नहे मोर प्रार्थना-

बिपदे आमी ना जानी कोरी भय।

दुःख तापे व्यथित चिते नाई-बा दिले सांत्वना

दुःखे जेनो कोरिते पारी जय।

ईश्वर से मेरी यह प्रार्थना नहीं है कि वह विपत्ति में मेरी रक्षा करें, मेरी प्रार्थना है कि मैं विपत्ति में न घबराऊँ। दुःख ताप से व्यथित मेरे हृदय को भले सांत्वना न दो, पर मैं उस दुःख पर जीत हासिल कर सकूँ।

सुस्मिता सरकार

वरिष्ठ लेखाकार

जीवन राग

मानव जीवन की लंबी विकास यात्रा कई त्रासदियों की साक्षी रही है। आदि काल से ही मनुष्य चुनौतियों पर विजय पाकर अपने अस्तित्व की रक्षा करने में जुटा है। कभी चुनौतियाँ अपना जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की होती है, तो कभी चुनौती प्रकृति के कोप के रूप में आती है। कभी-कभी चुनौतियाँ मनुष्य स्वयं ही सृजित करता है।

मनुष्य चुनौतियों का सामना करता है, लड़ता है, थकता है, हारता भी है परंतु संघर्ष करना नहीं छोड़ता। अपने अदम्य इच्छा शक्ति और असीम जिजीविषा के कारण वह विषम परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहता है।

अंग्रेजी में एक कहावत है 'मैन प्रपोजेज गॉड डिस्पोजेस'। मनुष्य की संघर्ष यात्रा सहज नहीं है। इस संघर्ष की नियति में असफल होने की पूरी संभावना है। परंतु मनुष्य कभी भी नियति को सहज स्वीकृति नहीं देता। परास्त होकर वह भाग खड़ा नहीं होता। वह उठता है, श्रम करता है और पूरी ताकत लगाकर नियति को बदल देता है।

सफलता पाकर भी वह थमता नहीं। नई ऊंचाई पाने के लिए वह एक नए आकाश के विस्तार में जुट जाता है। मनुष्य की यही प्रकृति उसे दूसरे जीवों से भिन्न बनाती है।

मानवता ने दो विकराल विश्वयुद्ध की विभीषिका को सहा है। औपनिवेशिक ताकतों ने एक बड़े वर्ग के श्रम और संसाधन का भरपूर दोहन किया है। भारत भी कभी उपनिवेश था तथा हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन का एकमात्र ध्येय अपने देश को दासता से मुक्त करना था। मानों स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ स्थितियाँ बिल्कुल ठीक हो जाएंगी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश ने विभाजन का दंश झेला। एक के बाद एक कई विपदाएँ आई पर सभी परिस्थितियों में हमारी अपराजेय इच्छाशक्ति फौलाद बनकर खड़ी रही।

मानव इतिहास महामारी और युद्ध की भयावहता से भरी है। लगभग 100 वर्ष पहले सन 1918 से 1920 के दौरान 'स्पेनिश फ्लू' नामक महामारी ने असंख्य प्राण ले लिए। पूरे यूरोप में इस

महामारी ने भयंकर क्षति की। इस महामारी की आंच भारत तक भी आई थी। अंग्रेजों की ओर से जो भारतीय सिपाही प्रथम विश्वयुद्ध लड़ने विदेश गए थे, वे अनजाने में ही संक्रमण के वाहक बनकर स्वदेश लौटे थे। अनुमान है कि उस महामारी में लगभग 5 करोड जानें गईं। 14वीं शताब्दी के मध्ययुगीन यूरोप में असंख्य लोग 'प्लेग' महामारी से असमय काल के गाल में समा गए। उस महामारी की भयावहता का अनुमान इस तथ्य से प्रकट होता है कि उस उपमहाद्वीप की आधी आबादी खत्म हो गई थी।

इंग्लैंड के अर्थशास्त्री थॉमस रॉबर्ट माल्थस का विचार था कि जनसंख्या जिस तेजी से बढ़ती है, संसाधन उतनी तेजी से नहीं बढ़ते। अतः जनसंख्या का दबाव अधिक होने पर युद्ध या महामारी द्वारा प्राण हानि होती है, जिससे जनसंख्या और संसाधन का संतुलन ठीक रहे। इस विचार से किसी को असहमति हो सकती है, परंतु यह सर्वविदित है कि प्रकृति अपने दोहन का प्रतिशोध बड़े क्रूर तरीके से लेती है।

भारतीय इतिहास में सूखा, बाढ़, महामारी, अकाल जैसे कई स्याह पृष्ठ हैं। आजादी के बाद हरित क्रांति तथा अन्य तकनीकों की सहायता से कुछ समस्याओं पर काबू पाया गया है।

एक वर्ष पहले कोरोना वायरस ने भारत में दस्तक दी। सरकार ने सजगता से लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग जैसे आवश्यक कदम उठाए। अचानक जीवन की गतिधारा मानों थम-सी गई। चारों ओर भय का वातावरण तैयार हो गया। सभी अपने घरों में कैद हो गए। टेलीविजन पर आ रही खबरें और कोरोना संक्रमितों का बढ़ता ग्राफ चिंताएँ बढ़ा रही थीं। पर लोगों ने अदम्य जिजीविषा का परिचय दिया।

लोगों ने लॉकडाउन का कड़ाई से पालन करने में सरकार को सहयोग दिया। सामाजिक दूरी का ख्याल रखा गया। साफ-सफाई तथा मास्क पहनने की अनिवार्यता की समझ बनी। इस जन

अभियान के लिए लोगों को जागरूक करने में सोशल मीडिया ने अहम भूमिका निभाई है। सोशल मीडिया की मदद से हाथों की सफाई, सैनिटाइजर का उपयोग, मास्क पहनने की महत्ता तथा भीड़ से बचने जैसी सूचनाएं आसानी से जन-जन तक पहुंचाया जाना संभव हुआ। सोशल मीडिया की मदद से ही हम अपनों से दूर रहकर भी उनसे संपर्क बनाए रखने में सफल हुए। इंटरनेट की मदद से वर्क फ्रॉम होम संभव हो सका। इस बार महामारी से मुकाबला करने हेतु पहले की अपेक्षा अधिक साधन उपलब्ध हैं।

2021 की शुरुआत से ही जन-जीवन तेजी से सामान्य हो रहा है। कोरोना अभी समाप्त नहीं हुआ है, पर स्थिति काफी हद तक नियंत्रण में है। लोग दुगुने जोश से अपने काम में जुट गए हैं। कोरोना की वैक्सीन भी आ गई है। यह उम्मीद की नई किरण लेकर आई है। महामारी हमेशा त्रासदी लेकर आती है। पर मानव की जिजीविषा और संघर्ष के सामने उसे घुटने टेकने पड़ते हैं। मानव जीवन में संघर्ष उतना ही पुराना है, जितनी पुरानी मानव सभ्यता। इंसान मुसीबत से लड़कर सफलता का आनंद लेता है। वैसा ही संघर्ष करोना महामारी के विरुद्ध अभी भी जारी है। भारत ही नहीं पूरी दुनिया इस नई महामारी से लड़ रही है। हमें इस लड़ाई के लिए स्वयं को मानसिक रूप से भी तैयार करना होगा। यदि चुनौती बड़ी हो तो हमारा संकल्प भी बड़ा होना चाहिए। हमारी दृढ़ता और हमारा संकल्प आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगे।

चंदन कुमार

हिंदी अधिकारी

कार्यालय में आयोजित विविध कार्यक्रमों की झलकियाँ।

कार्यालय में आयोजित वार्षिक खेलकूद 2020-21 – पुरस्कार वितरण समारोह ।